MERI KHETI

मेरी खेती

- खेत खलियान
- सब्जी
- फूल
- मशीनरी
- मौसमी व अन्य कृषि सुझाव
- सरकारी नीतियां
- औषधीय खेती
- प्रगतिशील किसान

फरवरी, 2024 मुल्य: 49रु

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 02
सब्जी	03 - 06
फल	07 - 10
फूल	11 - 12
मशीनरी	13 - 15
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	16 - 18
सम्पादकीय	20
सामान्य लेख	21 - 24
सरकारी नीतियां	25 - 35
किसान समाचार	36 - 50
औषधीय खेती	51
मिट्टी की सेहत – खाद	52
प्रगतिशील किसान	53

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

बजट में राम भरोसे कृषि

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने आम बजट में लोक लुभावन घोषणाएं नहीं कीं। चुनाव पूर्व पेश हुए अंतरिम बजट में कृषि क्षेत्र में पोस्ट हार्वेस्टिंग प्रोद्योगिकी, मत्स्य एवं डेयरी जैसे क्षेत्रों में निजी निवेश को बढाने की घोषणा भर की। 2024 में सत्ता में आई मोदी सरकार ने 3 करोड़ ग्रामीणों को आवास देने का दवा तो किया लेकिन चुनाव पूर्व आए बजट में स्थिति राम मय ही नजर आई। सरकार को राम का भरोसा भरपूर है इसीलिए बजट में बहुसंक्षक निर्भरता वाले कृषि क्षेत्र को कुछ खास नहीं मिल पाया।

बजट में की गई घोषणाओं से स्पष्ट है कि सरकार पूरी तरह से आस्वस्त है। आगामी लोकसभा चुनाव में बिखरे विपक्ष एवं देश में राम मंदिर निर्माण के बाद व्याप्त लहर प्रांण वायु का काम कर रही है। सरकार वापसी को लेकर निश्चिन्त है। इसीलिए कृषि पर आत्मनिर्भरता वाले देश में कृषि क्षेत्र को बजट में कुछ विशेष नहीं दिया गया है। कृषि से जुड़े परिवारों की औसत मासिक आय में फसल क्षेत्र की भागीदारी पिछले सालों से लगातार घट रही है, इसके उलट किसानों के परिश्रम में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इसके बाद भी किसानों की आवश्यकता पूरी नहीं हो पा रही हैं। प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना पीएम किसान के बजट में भी इसीलिए इजाफा नहीं किया गया है। सरकार पीएम किसान योजना की किस्तों को बढ़ाने को लेकर विच. ारत रही लेकिन इसे बढ़ाया नहीं गया।

बजटीय आवंटन के संदर्भ में, कृषि क्षेत्र को वित्त वर्ष 2025 के बजटीय अनुमान में 146,819 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया, जो वित्त वर्ष 2024 के संशोधित अनुमान (आरई) के मुकाबले मामूली 4.47 प्रतिशत अधिक था। किसान मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के चुनाव में की गई घोषणाओं को दृष्टिगत करते हुए फसलों के उच्च एमएसपी की उम्मीद कर रहे थे।

चावल की निर्यात पर पाबंदी से बढ़ती कीमतों पर सरकार ने ध्यान आकर्षित जरूर किया है। सरकार भारत चावल के नाम से सस्ता चावल मुहैया करायेगी। यह चावल ₹29 किलो ग्राम की दर से मिलेगा। सरकार उर्वरक सब्सिडी में कटौती की दिशा में काम कर रही है लेकिन नैनो डीएपी, नैनो यूरिया जैसे तरल उर्वरक अभी किसानों को बहुत ज्यादा रास नहीं आ रहे हैं। वित्त वर्ष 25 के लिए उर्वरक सब्सिडी 1.64 लाख करोड़ रुपये आंकी गई है, जो वित्त वर्ष 24 के संशोधित अनुमान से 13.18 प्रतिशत कम है। यूंतो किसान पूरा काम भगवान भरोसे करते हैं लेकिन सरकार को किसानों से ज्यादा राम का भरोसा है।

धन्यवाद,

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

श्री कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

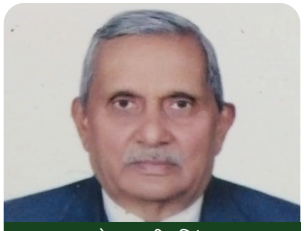

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक आई ए आरआई

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन (एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

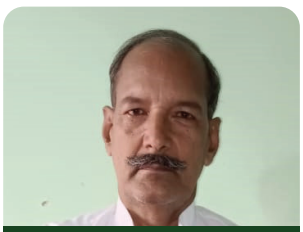

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

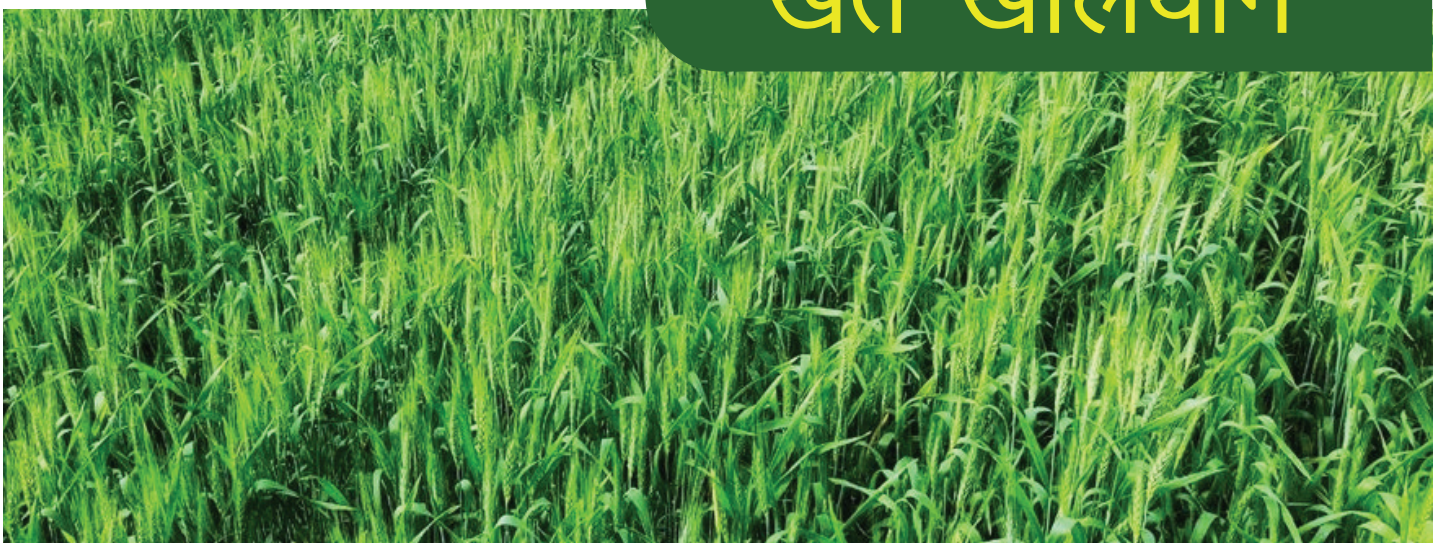

इस नई साल में आने वाली ठंड किसानों की फसलों को कितना नुकसान पहुँचाने वाली है?

नये साल के दस्तक देते ही फिलहाल तेजी से ठंड बढ़नी शुरू हो गई है, जिससे आम जन जीवन परभी काफी प्रभाव पड़ रहा है। सर्दियों के दिनों में खेती से संबंधित काम करने में भी कठिनाइयाँ आती हैं।ऐसे में मौसम विभागने किसानों की चिंता को और ज्यादा बढ़ा दिया है। मौसम विभाग के मुताबिक, आगामी दिनों में कड़ाके की ठंड पड़ेगी। IMD के मुताबिक, बहुत सारी जगहों पर तापमान शून्य से भी नीचे जाने की संभावना जताई जा रही है। अब ऐसी स्थिति में किसानों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

किसानों पर संकट आने की काफी संभावना है

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड पड़ने की चेतावनी दी है। इस दौरान तापमान जीरो डिग्री सेल्सियस से भी नीचे जा सकता है।ठंड की वजह से किसानों को विभिन्न प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इससे कृषकों को सर्वाधिक समस्या हो सकती है। उनमें फल, सब्जी समेत बाकी फसलों का उत्पादन करने वाले कृषक भाई सम्मिलित हैं।

किसान भाई क्या उपाय करें ?

- फल और सब्जियों की फसलों को ढ़ककर रखें।
- पशुओं को गर्म रखने की व्यवस्था करें। समय पर उनके लिए उचित मात्रा में चारा एवं पानी मुहैय्या कराऐं।
- कौन–से क्षेत्रों में ज्यादा ठंड पड़ेगी?
- पहाड़ी क्षेत्रों के अतिरिक्त राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में आगामी दिनों में प्रचंड ठंड पड़ेगी।

मौसमिक परिवर्तन से बागवानी को काफी हानि

बतादें, कि सर्दी में इजाफा होने की वजह से फल और सब्जियों की फसलों को काफी क्षति पहुंच सकती है। बतादें, कि गोभी, मटर, प्याज, टमाटर, बैंगन और आलू जैसी फसलों को हानि हो सकती है। इन फसलों को ठंड से संरक्षित करने के लिए किसानों को काफी सावधानी बरतनी पड़ेगी। साथ ही, ठंड की वजह से धान की फसलों के बीज अंकुरण में विलंभ हो सकता है। इससे धान की फसल की उपज काफी प्रभावित हो सकती है। इनके अतिरिक्त ठंड की वजह से पशुओं के बीमार पड़ने का खतरा बढ़ जाता है। पशुओं को ठंड से संरक्षित रखने के लिए किसानों को अत्यंत सावधानी बरतनी चाहिए।

ठंड के चलते पड़ने वाले पाले से फसलों को बचाने के लिए कुछ उपाय

सर्दियों में पाला पड़ने की वजह से कृषकों की समस्या भी काफी बढ़ जाती है। हम सामान्यतः देखते हैं, कि पाला पड़ने पर किसान अपने खेत– खलियानों पर धुंआ करते हैं। सर्दियों में कृषकों को अपने खेतों में धुआं करते हैं। यदि आप ग्रामीण परिवेश में हों या उसके समीप रहते होंगे। ठंड में आपने ये देखा होगा कि शर्दी बढ़ने के साथ ही कृषकों की समस्याऐं काफी बढ़ जाती हैं। इतना ही नहीं अपनी फसलों को संरक्षित करने के लिए भी किसान भाई धुंआ करते हैं। आज हम आपको बताएंगे कि कृषक अपने खेतों में धुआं किस वजह से करते हैं और कृषक धुंआ करके अपनी फसलों को किस प्रकार से बचाते हैं।

आज कल ठंड के कारण खेतों में पड़ रहा प्रचंड पाला

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि सर्दियों के दौरान खेतों में पाला पड़ता है। खेत में पाला पड़ने की वजह से तापमान जीरो डिग्री सेंटीग्रेड से भी नीचे चला जाता है। ऐसे हालात में पौधों की कोशिकाओं में ठंड के चलते बर्फ जम जाता है। इसी वजह से कोशिकाएं मर जाती हैं। इसलिए पेड़ – पौधों को पाले से संरक्षित करने के लिए किसान पुराने उपाय खेतों में करते हैं। ये भी पढ़ेंरू जाड़े के मौसम में अत्यधिक ठंड (पाला) से होने वाले नुकसान से केला की फसल को कैसे बचाएं ?

खेतों को पाले के कहर से बचाने की तरकीब

खेतों को सर्दियों के मौसम में पाले से संरक्षण करने के लिए कृषक विभिन्न प्रकार के उपाय करते हैं। इनमें सबसे सफल एवं उपयोगी उपाय है, खेत के किनारों पर बड़े–बड़े वृक्ष जैसे – शीशम, बबूल, जामुन आदि लगाना चाहिए। विगत कुछ वर्षों के उपरांत यह पेड़ किसानों के लिए प्रॉपर्टी बन जाते हैं। साथ ही, खेत के लिए वायुरोधी (हवा को रोकने) का कार्य करते हैं। जो कृषक अपने खेत के किनारों पर वृक्ष नहीं लगा सकते वह खेतों में धुआं करते हैं। यह उपाय बहुत पुराना और अत्यंत कारगर माना गया है। इस वजह से कृषक सर्दियों में खेतों में धुंआ करते हैं।

खेतों के अंदर धुआं करने के क्या–क्या लाभ हैं ?

ठंड के समय में जब हद से ज्यादा पाला पड़ता है, उस दौरान किसान खेतों में धुंआ करते हैं। धुंआ करने से उसकी फसल पाले की वजह से तकरीबन बच जाती है। क्योंकि, धुंआ करने से खेत में हरित गृह प्रभाव (ग्रीन हाउस इफेक्ट) बन जाता है, जिसमें ऊष्मा अंदर तो आ सकती है लेकिन उससे बाहर नहीं जा सकती है। इस वजह से खेत के अंदर का तापमान बेहद बढ़ जाता है और फसलें पाले के प्रकोप से बच जाती हैं।

हर सब्जी के साथ उपयोग होने वाले आलू को घर पर उगाने का आसान तरीका क्या है?

कोई भी व्यक्ति अपने घर में आलू का उत्पादन करके काफी धन की बचत कर सकता है। ये एक ऐसी सब्जी है, जिसका इस्तेमाल प्रत्येक सब्जी में किया जाता है। आलू एक ऐसी सब्जी है, जिसका उपयोग हर घर में किया जाता है। ये भारत के घरों में सबसे ज्यादा इस्तेमाल में आने वाली सब्जी भी है। आलू की सब्जी घरों में विभिन्न प्रकार से बनती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आप इसे घर में भी उगा सकते हैं। इसे घर पर लगाने के बाद बाजार से आलू खरीदकर लाने का झंझट ही खत्म हो जाएगा, आइए जानते हैं इसे घर में लगाने का आसान तरीका।

आलू उगाने के समय इन बातों का विशेष ध्यान रखें

यदि आप अपने घर पर ही आलू उगाना चाहते हैं, तो आप अच्छे बीजों का चुनाव करें। आलू उगाने के लिए आप सर्टिफाइड बीजों का ही चयन करें। इसके अतिरिक्त आप आलू को भी बीज के तोर पर उपयोग कर सकते हैं। अगर आप आलू का उपयोग कर रहे हैं, तो आप सफेद बड्स अथवा फिर स्प्राउट्स नजर आने वाले बीजों को इस्तेमाल में लें। इस कारण से शीघ्र ही पौधे निकल आऐंगे। ये भी पढ़ेंरू आलू की खेती से संबंधित विस्तृत जानकारी आलू या फिर किसी भी बाकी फसल की खेती में मृदा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इसके लिए आप शानदार मृदा लें उसमें बेहतर ढंग से खाद डालें। आप इसके लिए 50 प्रतिशत मिट्टी, 30 प्रतिशत वर्मी कम्पोस्ट एवं 20 फीसदी कोको पीट का उपयोग कर सकते हैं। आप इन समस्त चीजों को मिलाकर एक बड़े गमले में लगा दें।

आलू को घर पर बेहतर ढ़ंग से उगाऐं

आलू के अंकुरों को गमले, कंटेनर अथवा क्यारी में मृदा के नीचे 5–6 इंच नीचे दबा दें। ऊपर से सही ढक कर पानी डाल दें। आप बाजार में बड़े गमले, ग्रो बैग, घर पर कोई पुरानी बाल्टी अथवा कंटेनर का भी उपयोग कर सकते हैं। आलू के अंकुरों को गमले, कंटेनर या क्यारी में मृदा के नीचे 5–6 इंच नीचे दबा दें। ऊपर से सही तरीके से पानी डाल दें। आप बाजार में उपलब्ध ग्रो बैग, बड़े गमले, घर पर कोई पुरानी बाल्टी अथवा कंटेनर भी उपयोग कर सकते हैं।

राजमा एवं फ्रेंच बीन में सफेद तना सड़न रोग को प्रबंधित किए बिना इसकी सफल खेती करना संभव नहीं

स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम कवक के कारण होने वाला सफेद तना सड़न, फ्रेंच बीन्स ,राजमा सहित विभिन्न फसलों को प्रभावित करने वाली एक विनाशकारी बीमारी है। यह मृदा–जनित रोगजनक कृषि उत्पादकता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है और खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है। सफेद तना सड़न, जिसे स्क्लेरोटिनिया तना सड़न के नाम भी जाना जाता है, एक कवक रोग है जो विभिन्न प्रकार की फसलों को प्रभावित करता है, जिसमें फ्रेंच बीन्स एवं राजमा विशेष रूप से अतिसंवेदनशील होते हैं। रोगजन, स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम, एक नेक्रोट्रॉफिक कवक है जो सेम, सूरजमुखी और सलाद सहित कई मेजबान पौधों को संक्रमित करने की क्षमता के लिए जाना जाता है। प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों को विकसित करने और कृषि उत्पादन पर इसके प्रभाव को कम करने के लिए इस बीमारी की विशेषताओं को जानना समझना महत्वपूर्ण है।

लक्षण: फ्रेंच बीन्स में सफेद तना सड़न की पहचान करने के लिए विशिष्ट लक्षणों पर गहरी नजर रखने की आवश्यकता होती है। प्रारंभ में, प्रभावित पौधे तनों पर, अक्सर मिट्टी की सतह के पास, पानी से लथपथ घाव दिखाई देते हैं। जैसे–जैसे बीमारी बढ़ती है, ये घाव नरम, सफेद, कपास जैसी मायसेलियल वृद्धि में विकसित होते हैं। कवक स्क्लेरोटिया, छोटी काली संरचनाएँ पैदा करता है, जो मिट्टी में रोग के बने रहने में योगदान देता है। संक्रमित पौधे मुरझा जाते हैं, जिससे कुल उपज में भारी गिरावट आती है।

कारक एजेंटरू स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम, सफेद तना सड़न का रोग कारक , एक व्यापक मेजबान सीमा(भ्वेज तंदहम) है और स्क्लेरोटिया के रूप में मिट्टी में लम्बे अवधि तक जीवित रह सकता है। ये स्क्लेरोटिया प्राथमिक इनोकुलम स्रोतों के रूप में काम करते हैं, जो अनुकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में अंकुरित होते हैं। कवक वायुजनित एस्कॉस्पोर पैदा करता है, जिससे स्वस्थ पौधों में इसका प्रसार आसान हो जाता है। प्रभावी रोग प्रबंधन रणनीतियों को तैयार करने के लिए रोगजनक के जीव विज्ञान और जीवनचक्र को समझना आवश्यक है।

जीवनचक्र: स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम के जीवनचक्र में पर्यावरणीय कारकों और मेजबान संवेदनशीलता का एक जटिल परस्पर क्रिया शामिल है। स्क्लेरोटिया उपयुक्त परिस्थितियों में अंकुरित होता है, जिससे मायसेलियम का निर्माण होता है जो मेजबान पौधे को संक्रमित करता है। कवक एपोथेसिया, कप के आकार की संरचनाएं पैदा करता है जो हवा में एस्कोस्पोर छोड़ती है। ये एस्कोस्पोर काफी दूरी तक फैल सकते हैं, जिससे रोगजन के व्यापक प्रसार में योगदान होता है। इस जीवनचक्र की समझ रोग की घटना की भविष्यवाणी करने और निवारक उपायों को लागू करने में सहायता मिलती है।

रोग के विस्तार (प्रसार) को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

इस रोग के फैलाव के लिए निम्नलिखित परिस्थि. तियां सहायक होती है जैसे पौधे को सस्तुति दूरी पर नही खाए जाने से पौधों का घना होना ,लंबे समय तक उच्च आर्द्रता, ठंडा, गीला मौसम,20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच का तापमान इस रोग के विकसित होने में सहायक होता है। यह रोग 5 डिग्री सेल्सियस से लेकर 30 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान पर सफेद सड़ांध विकसित हो सकता है। स्क्लेरोशीया पर्यावरण की स्थिति के आधार पर कई महीनों से लेकर 7 साल तक कहीं भी मिट्टी में जीवित रह सकता है। मिट्टी के ऊपरी 10 सेमी में स्केलेरेट्स नम स्थितियों के संपर्क में आने के बाद अंकुरित होकर रोग फैलाने लगते है।

सफेद तना सड़न रोग को कैसे करें प्रबंधित?

सफेद तना सड़न के प्रबंधन के लिए सांस्कृतिक, जैविक और रासायनिक नियंत्रण विधियों को शामिल करते हुए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। फसल चक्र, घने पौधों से बचना और मिट्टी की उचित जल निकासी बनाए रखना सांस्कृतिक प्रथाएं हैं जो बीमारी की घटनाओं को कम करती हैं। रोगजनक को दबाने के लिए जैविक नियंत्रण एजेंटों, जैसे कि विरोधी कवक,का प्रयोग किया जा सकता है। फफूंदनाशकों से युक्त रासायनिक नियंत्रण प्रभावी हो सकता है जब इसे रोकथाम के लिए या संक्रमण के प्रारंभिक चरण के दौरान लागू किया जाए। हालाँकि, प्रतिरोध विकास को रोकने के लिए रसायनों का विवेकपूर्ण उपयोग महत्वपूर्ण है। फूल के दौरान एक कवकनाशी जैसे साफ या कार्बेन्डाजिम/2ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।घनी फसल लगाने से बचें। संक्रमित फसल में जुताई गहरी करनी चाहिए। रोग की उग्र अवस्था में बीन्स के बीच में कम से कम 8 साल का फसल चक्र अपनाना चाहिए।

चुनौतियाँ और भविष्य के परिप्रेक्ष्य

हालाँकि सफेद तना सड़न को समझने और प्रबंधित करने में प्रगति हुई है, चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। प्रतिरोधी सेम किस्मों का विकास एक प्राथमिकता बनी हुई है, जिसके लिए पौधों के प्रजनन और आनुवंशिक इंजीनियरिंग में प्रगति की आवश्यकता है। टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल दृष्टिकोण, जैसे कि जैव कीटनाशकों का उपयोग, भविष्य में रोग प्रबंधन के लिए आशाजनक है। उभरती चुनौतियों का समाधान करने और सफेद तना सड़न के खिलाफ फ्रेंच बीन फसलों की दीर्घकालिक लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए निरंतर अनुसंधान और सहयोग आवश्यक है।

सारांश

स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम के कारण होने वाली फ्रेंच बीन्स का सफेद तना सड़न, वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है। प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों को लागू करने के लिए लक्षण, कारण कारक, जीवनचक्र और इसके प्रसार को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना महत्वपूर्ण है। एक समग्र दृष्टिकोण जो सांस्कृतिक प्रथाओं, जैविक नियंत्रण और कवकनाशी के विवेकपूर्ण उपयोग को एकीकृत करता है, आवश्यक है। चल रहे अनुसंधान और तकनीकी प्रगति सफेद तना सड़न के प्रभाव को कम करने और फ्रेंच बीन फसलों की निरंतर उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए स्थायी समाधान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

कोड को स्कैन कर मेरीखेती यूट्यूब चौनल सब्सक्राइब करें।

रबी सीजन में गेहूं फसल की उपज को बढ़ाने के लिए सिंचाई की अहम भूमिका

भारत के अंदर रबी सीजन में सरसों व गेहूं की खेती Mustard and wheat cultivation अधिकांश की जाती है। गेहूं की खेती wheat cultivation में चार से छह सिंचाईयों की जरूरत होती है। ऐसे कृषकों को गेहूं की उपज बढ़ाने के लिए गेहूं की निर्धारित समय पर सिंचाई करनी चाहिए। अगर कृषक भाई गेहूं की समय पर सिंचाई करते हैं तो उससे काफी शानदार पैदावार हांसिल की जा सकती है। इसके साथ ही सिंचाई करते वक्त किन बातों का ख्याल रखना चाहिए। कृषकों को इस बात की भी जानकारी होनी आवश्यक है। सामान्य तौर पर देखा गया है, कि बहुत सारे किसान गेहूं की बिजाई करते हैं। परंतु, उनको प्रत्याशित उपज नहीं मिल पाती है। वहीं, किसान गेहूं की बुवाई के साथ ही सिंचाई पर भी विशेष तौर पर ध्यान देते हैं तो उन्हें बेहतर उत्पादन हांसिल होता है। गेहूं एक ऐसी फसल है, जिसमें काफी पानी की जरूरत होती है। परंतु, सिंचाई की उन्नत विधियों का इस्तेमाल करके इसमें पानी की काफी बचत की जा सकती है। साथ ही, शानदार उत्पादन भी हांसिल किया जा सकता है।

गेहूं की फसल में जल खपत Wheat crop required water

गेहूं की फसल Wheat Crop की कब सिंचाई की जाए यह बात मृदा की नमी की मात्रा पर निर्भर करती है। अगर मौसम ठंडा है और भूमि में नमी बरकरार बनी हुई है, तो सिंचाई विलंभ से की जा सकती है। इसके विपरीत अगर जमीन शुष्क पड़ी है तो शीघ्र सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। वहीं, अगर मौसम गर्म है तो पौधों को सिंचाई की ज्यादा जरूरत होती है। ऐसी स्थिति में समय–समय पर सिंचाई की जानी चाहिए ताकि जमीन में नमी की मात्रा बनी रहे और पौधे बेहतर ढ़ंग से बढ़ोतरी कर सके। गेहूं की शानदार उपज के लिए इसकी फसल को 35 से 40 सेंटीमीटर जल की जरूरत होती है। इसकी पूर्ति कृषक भिन्न–भिन्न तय वक्त पर कर सकते हैं।

गेहूं की फसल हेतु सिंचाई Wheat Crop Irrigation

सामान्य तौर पर गेहूं की फसल में 4 से 6 सिंचाई करना काफी अनुकूल रहता है। बतादें, कि इसमें रेतीली भूमि में 6 से 8 सिंचाई की जरूरत होती है। रेतीली मृदा में हल्की सिंचाई की जानी चाहिए, जिसके लिए 5 से 6 सेंटीमीटर पानी की आवश्यकता होती है। साथ ही, भारी मिटटी में गहरी सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसमें कृषकों को 6–7 सेंटीमीटर तक सिंचाई करनी चाहिए। यह समस्त सिंचाई गेहूं के पौधे की भिन्न–भिन्न अवस्था में करनी चाहिए, जिससे ज्यादा लाभ हांसिल किया जा सके।

अंजीर की खेती से कमा सकते हैं किसान अच्छा मुनाफा

अंजीर की खेती हर प्रकार की जलवायु में की जा सकती हैं। लेकिन अंजीर की खेती ज्यादातर गर्म और शुष्क मौसम में की जाती है। अंजीर के पौधे को किसी भी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता हैं ,लेकिन ज्यादा बेहतर दोमट मिट्टी को माना जाता है। अंजीर के खेत में जल निकासी का भी प्रबंध होना चाहिए ताकि ज्यादा पानी होने पर, जल को सींचा जा सके।

अंजीर की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और तापमान क्या होना चाहिए

अंजीर की खेती के लिए शुष्क जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। अंजीर की खेती कम वर्षा वाले क्षेत्र में ज्यादा अच्छे से की जा सकती है। अंजीर की फसल गर्मियों में पक कर तैयार हो जाती हैं। अंजीर की फसल को तैयार होने में लगभग 25–30 डिग्री टेम्परेचर की आवश्यकता रहती है। सर्दियों में गिरने वाला पाला अंजीर की फसल के लिए हानिकारक रहता हैं।

अंजीर की फसल के लिए खेत को कैसे तैयार करें

अंजीर का पौधा यदि अच्छी से लग जाता हैं तो ये 40–50 साल तक फल देता है। इसीलिए अंजीर की खेती करने से पहले किसानो द्वारा खेत की जुताई अच्छे से कर लेनी चाहिए,ताकि पहली फसल के अवशेष खेत में न रहे। खेत की जुताई कम से 2 बार करें उसके बाद खेत में अधिक उत्पादकता के लिए गोबर खाद का भी उपयोग कर सकते है।

भारत सरकार बंजर जमीन पर अंजीर की खेती के लिए 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान कर रही हैइसके बाद खेत को कुछ दिनों के लिए खाली छोड़ दे ,उसे सूर्य की रौशनी लगने दे उसके बाद जब खेत भुरभरा दिखाई देने लगे उसमे फिर से खाद और उर्वरक दे। ऐसा करने से खेत की उर्वरकता बढ़ेगी। इसके बाद खेत को रोटावेटर से जुताई करें फिर उसके बाद खेत में सहाल देकर उसके समतल कर ले। ऐसा करने से खेत में पानी भरने और रुकने जैसे समस्याएं नहीं रहेगी।

कैसे लगाए खेत में अंजीर के पौधे

खेत को समतल करने के बाद इसमें गड्ढो को तैयार किया जाता हैं ये गद्दे 2 फीट चौड़े और 1 फीट गहरे होते है। इन गड्ढो को 5 मीटर की दूरी पर तैयार किया जाता है। इन गड्ढो में गोबर खाद और रासायनिक खाद दोनों को मिलाकर भरा जाता है। ऐसा करने से पौधे में भी बढ़ोत्तरी होती हैं और साथ ही खेत की उर्वरकता भी बनी रहती है। पौधे को गड्ढे में लगाने के बाद 1.5 सेमी तक मिट्टी डालकर पौधे को दवा दे। अंजीर की खेती को ज्यादातर अगस्त और जुलाई माह में करना बेहतर माना जाता हैं।

अंजीर की खेती में लगने वाले रोग

अंजीर की खेती में वैसे तो बहुत ही न के बराबर रोग लगते हैं ,लेकिन कभी कभी ज्यादा बारिश होने की वजह से इसमें कीट लग जाते हैं। यह कीट पौधे के पत्तों को खाकर उनमे होने वाले विकास को प्रभावित करते है।

अंजीर के पौधे की सिंचाई

अंजीर की खेती के लिए ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं रहती हैं, तापमान के अधिक होने पर ही इसमें पानी लगाया जाता हैं। साथ ही सर्दियों में भी इसे बहुत कम पानी जरुरत पड़ती हैं, 20–25 दिन के अंतराल पर इनमे पानी दिया जाता है। इसीलिए अंजीर को कम पानी वाले इलाको में भी किया जा सकता हैं।

अंजीर के पौधे में होने वाली खरपतवार

अंजीर की खेती में कुछ माह बाद खरपतार होने लगती हैं जो फसल को क्षति पहुंचा सकती है। इसीलिए किसानो द्वारा खेत में समय समय पर नराई और गुड़ाई का काम किया जाता हैं। ताकि खेत में से खरपतवार को निकला जा सकें। इसके लिए किसान कीटनाशक का भी उपयोग कर सकते है।

अंजीर के फलो का पकाव

इस फल के पकने का रंग अंजीर की किस्म पर निर्भर करता हैं क्यूंकि अंजीर की बहुत सी किस्म होती है। अंजीर का फल पक कर बहुत ही मुलायम हो जाता है। अंजीर के फल को तोड़ने के लिए ग्लब्स का उपयोग करें , क्यूंकि अंजीर के फल को तोड़ने पर एक प्रकार का दूध निकलता हैं। यदि ये शरीर पर कही लग जाता हैं तो इससे त्वचा से सम्बंधित रोग भी हो सकते है। फल को तोड़ने के बाद एक बर्तन में पानी भर कर उसे पानी में डाल दे। अंजीर की खेती ज्यादातर तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में की जाती हैं। अंजीर का पेड़ लम्बे समय तक फल देता हैं, अंजीर आय बढ़ाने का भी मुख्य स्रोत हैं। अंजीर शरीर को भी फिट रखने में सहायक होती है। अंजीर की खेती किसानो द्वारा बहुत ही कम लगत पर की जा सकती हैं और इससे अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। अधिक उत्पादन के लिए किसान अंजीर की अलग अलग किस्मो को भी उगा सकते है।

अधिक जानकारी के लिए विजिट करें : https://www.merikheti.com

इस राज्य में पपीते की खेती के लिए 75 % प्रतिशत अनुदान दिया जाऐगा

बिहार सरकार की ओर से पपीते की खेती करने वाले कृषकों को अनुदान प्रदान किया जाएगा। इसका फायदा किसान भाई आधिकारिक साइट पर जाकर ले सकते हैं। भारत भर में बहुत सारे फलों की खेती की जाती है।बिहार में भी विभिन्न तरह के फलों की खेती की जाती है, जिसमें लीची काफी ज्यादा खास है। परंतु, फिलहाल सरकार ने पपीते की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए किसान भाइयों को अनुदान देना शुरू कर दिया है।इसकी खेती करने वाले किसानों को बम्पर अनुदान दिया जाऐगा। दरअसल, पपीता की खेती काफी ज्यादा फायदेमंद व्यवसाय है।पपीता एक स्वादिष्ट एवं पौष्टिक फल है, जिसका उपभोग वर्ष भर किया जाता है।बागवानी क्षेत्र में पपीता की खेती की काफी शानदार आय की संभावना को देखते हुए बिहार सरकार प्रदेश के किसानों को प्रोत्साहित कर रही है।इसके अंतर्गत सरकार किसानों को पपीते के बाग लगाने के लिए अच्छा खासा अनुदान देती है।

एकीकृति बागवानी मिशन योजना के तहत मिलेगा लाभ

एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना के अंतर्गत किसानों को पपीता की खेती के लिए 75 फीसद अनुदान दिया जाता है। राज्य सरकार ने पपीता की खेती के लिए प्रतिहेक्टेयर 60,000 रुपये की इकाई लागत तय की है।कृषकों को इस पर 75% (45,000) रुपये का अनुदान मिलेगा। एक हेक्टेयर में पपीता की खेती के लिए केवल 15 हजार रुपये की लागत आऐगी।

किसान भाई यहाँ आवेदन करें

किसान भाई राज्य में पपीते की खेती करने के इच्छुक हैं। साथ ही, सरकार की योजना का लाभ पाना चाहते हैं। ऐसे कृषक आधिकारिक साइट horticulture-bihar-gov-in पर जाकर आवेदन करना पड़ेगा। बतादें, कि अधिक जानकारी के लिए किसान भाई आधिकारिक साइट अथवा नजदीकी उद्यान विभाग के कार्यालय पर जाकर भी संपर्क साध सकते हैं।

टिश्यू कल्चर तकनीक से इस राज्य में केले की खेती हो रही है

किसान भाई टिश्यू कल्चर तकनीक की सहायता से केले उगा सकते हैं। इससे कृषकों की आमदनी में काफी इजाफा होगा। साथ ही, फसल की गुणवत्ता भी अच्छी होगी। भारत के अंदर प्रमुख तोर पर बड़े पैमाने पर केले की खेती की जाती है। सब्जी से लगाकर चिप्स निर्मित करने तक केले की बेहद मांग है। अब ऐसी स्थिति में किसान भाई इसकी खेती कर काफी शानदार मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। परंतु, किसान भाई केला उत्पादन के लिए टिश्यू कल्चर तकनीक का उपयोग कर सकते हैं।

टिश्यू कल्चर तकनीक से केला उत्पादन

टिश्यू कल्चर तकनीक से केले की खेती करना एक बेहद फायदेमंद व्यवसाय सिद्ध हो सकता है। इस तकनीक के माध्यम से निर्मित किए गए पौधे रोगमुक्त और एक जैसे ही होते हैं, जिससे फसल की गुणवत्ता के साथ–साथ पैदावार में सुधार होता है। इसमें पौधे के एक छोटे टुकड़े को एक खास माध्यम में उत्पादित किया जाता है। इस माध्यम में पोषक तत्व एवं हार्मोन होते हैं जो पौधे की कोशिकाओं को बड़ी तीव्रता से विभाजित करने में सहयोग करते हैं। कुछ ही, माह में पौधे पर्याप्त ढ़ंग से विकसित हो जाते हैं एवं उन्हें खेत के अंदर लगाया जा सकता है।

बिहार में टिश्यू कल्चर तरीके से खेती हो रही है

बिहार राज्य के कृषक भाई भी टिश्यू कल्चर ढ़ंग से केले का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे बिहार में केला उत्पादन में गुणवत्ता के साथ आमदनी बढ़ोतरी हो रही है। केले के पौधे का उत्पादन बेहतर तरीके से सूखा हुआ और रेतीली दोमट मिट्टी में सबसे शानदार होता है। मृदा को अच्छे तरीके से ढीला करें और खरपतवार को पूरी तरह से हटा दें।

टिश्यू कल्चर तकनीक के क्या लाभ होते हैं?

- टिश्यू कल्चर तकनीक से निर्मित किए गए पौधे रोग से मुक्त होते हैं, जिससे फसल को बीमारियों से संरक्षण देने में सहयोग मिलता है।
- टिश्यू कल्चर तकनीक से तैयार किए गए पौधे एक जैसे आकार के होते हैं, जिससे फसल की गुणवत्ता में काफी सुधार होता है।
- टिश्यू कल्चर तकनीक से निर्मित किए गए पौधे आम तरीके से तैयार किए गए पौधों के मुकाबले में शीघ्र फल देने लगते हैं।
- टिश्यू कल्चर तकनीक से तैयार किए गए पौधे परंपरागत तरीके से तैयार किए गए पौधों के मुकाबले में ज्यादा उत्पादन देते हैं।

जाने मोगरा के फूल से मिलने वाले फायदे और नुकसान

मोगरा की खेती ज्यादातर मार्च के महीने में की जाती हैं। मोगरा सफेद रंग का होता ,इसका प्रयोग गजरे बनाने में, इत्र बनाने और अगरबत्तियां बनाने में किया जाता हैं। मोगरा बहुत ही सुगन्धित पुष्प है। मोगरे में बहुत से औषिधीय गुण पाए जाने की वजह से इसका इस्तेमाल दवाइयों में भी किया जाता है। मोगरे के फूल में से रात के वक्त बहुत अच्छी खुशबू आती हैं। जिसके कारण ज्यादातर लोग मोगरे के फूल को घरों में लगाना पसंद करते है। मोगरा का इस्तेमाल पाठ पूजा में भी किया जाता है। मोगरे के फूल को शांति और पवित्रता का प्रतीक माना जाता हैं।

मोगरा कितने प्रकार का होता हैं

मुख्य रूप से मोगरा तीन प्रकार का होता हैं। जिनमे अलग अलग प्रकार के ही फूल आते हैं जैसे पीले, गुलाबी और सफे। पालमपुर मोगरा, मोआत मोगरा, जैस्मिनम मोगरा ये सब मोगरे की प्रजातियां है।

मोगरा के फूल से मिलने वाले फायदे

मोगरा के फूल से बहुत से फायदे मिलते हैं इसका इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाइयों में किया जाता हैं। साथ ही साथ इस फूल का चढ़ावा भगवान् विष्णु पर भी किया जाता है।मोगरे के फूल को ज्यादातर ऐसी जगहों पर लगाया जाता हैं जहाँ सूरज की रौशनी मोगरे के फूल पर कम पड़े।

तनाव और चिंता में राहत दिलाता हैं

मोगरा के फूल से तनाव और चिंता में राहत मिलती है। मोगरा के फूल से तेल भी बनाया जाता हैं जो की शरीर की मसाज के लिए बेहद लाभकारी माना जाता हैं इसके उपयोग से नशो में राहत मिलती हैं।

कीड़े मकोड़े से बचाव

मोगरे के पेड़ को हम अपने घर में या बगीचे में लगा सकते हैं। इसकी महक से कीड़े मकोड़े दूर रहते है। मोगरे के फूल से बने डिफयूजर का भी हम इस्तेमाल कर सकते हैं इससे घर में खुशबू भी बनी रहती हैं साथ ही मूड को भी तरोताजा रखती है।

मधुमेह के रोग में हैं फायदेमंद

मोगरे के फूल का इस्तेमाल मधुमेह से पीड़ित लोगों के लिए भी लाभकारी हैं। मोगरे की फूल का चाय का सेवन करने से मधुमेह जैसे बीमारियों में आराम मिलता है। साथ ही ये ब्लड ग्लूकोस को भी संतुलित करता हैं।

सर्दी जुखाम में राहत देता हैं

मोगरे का सेवन करने से सर्दी और जुखाम में राहत मिलती हैं। मोगरे में एन्टीबैक्टेरिअल गुण होते हैं ,जो स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के जोखिम को कम करते हैं। इसके सेवन से पाचन किर्या भी संतुलित रहती हैं,और अन्य रोगो से भी बचाव किया जा सकता है।

माँसपेशियों के दर्द में सहायक

मोगरे का उपयोग माँसपेशियों के दर्द से छुटकारा पाने के लिए किया जाता हैं साथ ही ये पेट से जुड़े रोगो में भी सहायक होता हैं। शोध के अनुसार बताया गया हैं मोगरा कैंसर से पीड़ित लोगो के लिए भी आरामदायक हैं। मासपेशियों के दर्द से बचने के लिए मसाज थेरेपी भी ले सकते है।

मोगरे का सेवन करने से होने वाले नुक्सान

मोगरे के बहुत से फायदे हैं ,लेकिन मोगरे के बहुत से नुक्सान हैं। मोगरे का ज्यादा सेवन करने से शरीर को बहुत से नुक्सान हो सकते हैं जो की इस प्रकार है:

ज्यादा सेवन करने से ब्लड शुगर का स्तर हो सकता हैं कम

मोगरा का ज्यादा सेवन से शरीर में ब्लड का शुगर लेवल कम हो सकता हैं ,जिससे चक्कर आना ,सर दर्द होना जैसी परेशानियां हो सकती है। ब्लड शुगर कम से होने से दिल की धड़कन बढ़ने लगती हैं .

बांझपन की समस्या

महिलाओ द्वारा मोगरा का सेवन डॉक्टर के परामर्श द्वारा किया जाना चाहिए ,मोगरे का उपयोग औषिधि के रूप में किया जाता हैं। इसीलिए मोगरा का ज्यादा उपयोग करने से बांझपन जैसी समस्याएं आ सकती हैं। गर्भवती महिलाओ को इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

कम शुगर लेवल वाले न करें मोगरा का उपयोग

जिन व्यक्तियों का शुगर लेवल कम हैं उन्हें मोगरा का उपयोग नहीं करना चाहि। क्यूंकि मोगरा शरीर के अंदर ब्लड ग्लूकोस को कम करता हैं जिससे बहुत सी परेशा. नियां आ सकती हैं। मोगरे का फूल सूंदर होने के साथ साथ बहुत से लाभ प्रदान करता हैं। इसका इस्तेमाल मुँह के छालो को दूर करने के लिए भी किया जाता हैं। ये कैंसर और मधुमेह से सम्बंधित रोगो में भी सहायक हैं। मोगरा के पेड़ का उपयोग हम तनाव को कम करने के लिए भी करते है। मोगरे का उपयोग त्वचा से सम्बंधित रोगो के लिए भी किया जाता हैं ,इसका इस्तेमाल हम चेहरे के निखार के लिए भी कर सकते है।

अधिक जानकारी के लिए विजिट करें : https://www.merikheti.com

MAHINDRA 595 DI Vs Kubota MU 5502 ट्रैक्टर का तुलनात्मक विश्लेषण

आज हम आपको किसान का मित्र कहे जाने वाले ट्रैक्टर की जानकारी देंगे। भारतीय बाजार में इतने सारे ट्रैक्टर देखकर उलझन में फसे हैं, तो आज हम आपके लिए भारत के 2 सबसे मशहूर 50HP में आने वाले MAHINDRA 595 DI एवं Kubota MU 5502 ट्रैक्टर की तुलना लेकर आए है। खेती के लिए विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरणों की अहम भूमिका होती है। परंतु, इनमें सबसे प्रमुख ट्रैक्टर को माना जाता है। किसान एक ट्रैक्टर के साथ खेती के बहुत सारे कार्यों को सहज बना सकता है। अगर आप भी एक ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं एवं भारतीय बाजार में इतने सारे ट्रैक्टर मॉडल्स देखकर उलझन में फसे हैं, तो आज हम आपके लिए भारत के 2 सबसे पॉपुलर 50HP में आने वाले ट्रैक्टरों की जानकारी प्रदान करेंगे।

MAHINDRA 595 DI टे ज्ञनइ्वजं MU 5502 की विशेषताओं की तुलना

अगर हम इन शक्तिशाली ट्रैक्टरों की तुलना करें, तो महिंद्रा के इस ट्रैक्टर में 2523 सीसी क्षमता के साथ 4 सिलेंडर में Water Cooled इंजन आता है, जो 50 HP पावर उत्पन्न करता है। वहीं, कुबोटा का यह ट्रैक्टर 2434CC क्षमता वाले 4 सिलेंडर में स्पुनपक बववसमक इंजन के साथ आता है, जो 50 HP पावर उत्पन्न करता है। महिंद्रा ट्रैक्टर की अधिकतम पीटीओ 44 भ्च पावर है। वहीं, कुबोटा ट्रैक्टर की अधिकतम पीटीओ पावर 47 भ्च है। महिंद्रा का यह ट्रैक्टर 1600 किलोग्र. ाम भार उठाने की क्षमता रखता है। कुबोटा ट्रैक्टर 2100 किलोग्राम की भार उठाने की क्षमता के साथ आता है।

MAHINDRA 595 DI Vs Kubota MU 5502 के फीचर्स में तुलना

अगर हम इन ट्रैक्टर के फीचर्स की तुलना करें, तो MAHINDRA 595 DI ट्रैक्टर में आपको Mechanical / Power स्टीयरिंग के साथ 8 Forward 2 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स देखने को मिल जाता है। वहीं, Kubota MU 5502 ट्रैक्टर में Power (Hydraulic double acting) स्टीयरिंग के साथ 12 Forward + 4 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स प्रदान किया गया है। महिंद्रा 595 डीआई ट्रैक्टर 2WD ड्राइव में आता है, इसमें 6-00 x16 फ्रंट टायर और 14-9 x 28 रियर टायर दिए गए है। वहीं, कुबोटा एमयू 5502 एक टू व्हील ड्राइव ट्रैक्टर है, इसमें आपको 7.5 x 16 / 6.5 x 20 फ्रंट टायर और 16-9 x 28 रियर टायर देखने को मिल जाते हैं।

MAHINDRA 595 DI Vs Kubota MU 5502 की कीमत तुलना

महिंद्रा 595 डीआई ट्रैक्टर की अधिकतम शोरूम कीमत 6.95 लाख से 7 लाख रुपये तय की गई है। वहीं, कुबोटा एमयू 5502 ट्रैक्टर 9 लाख से 11 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत में आता है।

Mahindra अपने इस ट्रैक्टर के साथ 2 साल तक की वारंटी प्रदान करती है। वहीं, Kubota का यह ट्रैक्टर 5 वर्ष की वारंटी के साथ आता है।

भारतीय किसानों के बीच 40 से 45 HP में 6 लोकप्रिय ट्रैक्टर्स ?

ट्रैक्टर खेती किसानी के क्षेत्र में उपयोग होने वाला बेहद महत्वपूर्ण यंत्र है। यदि आप खेती–किसानी के कार्यों को सुगम बनाना चाहते हैं और बेहतरीन परफॉर्मेंस वाला ट्रैक्टर खरीदने के इच्छुक हैं। अब ऐसे में हम आपकी भारतीय मार्केट में बहुत सारे ट्रैक्टर मॉडल्स होने की वजह से चयन करने की कश्मकस को दूर करने के लिए 6 चुनिंदा ट्रैक्टर्स के बारे में जानकारी देंगे। खेती–किसानी में ट्रैक्टर की एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। क्योंकि, ट्रैक्टर के साथ किसान बड़े से बड़े कृषि कार्यों को काफी सुगमता से पूर्ण कर सकते हैं। आइए आपको बताते हैं, भारतीय बाजार में बिकने वाले पांच ट्रैक्टर्स के बारे में।

40 से 45 HP के 6 लोकप्रिय ट्रैक्टर

पॉवर ट्रैक 439 प्लस ट्रैक्टर

Powertrac कंपनी का यह Powertrac 439 च्सने ट्रैक्टर 2340CC क्षमता वाले 3 सिलेंडर Water Cooled इंजन के साथ आता है, जो 41 HP उत्पन्न करता है। इसका इंजन 2200 RPM उत्पन्न करता है और इसकी अधिकतम पीटीओ पावर 38.9 HP है। इस ट्रैक्टर की भार उठाने की क्षमता 1600 किलोग्राम निर्धारित की गई है। इस ट्रैक्टर में Power / Mechanical स्टीयरिंग के साथ 8 Forward + 2 Reverse गियरबॉक्स दिया जाता है। यह एक 2 WD ट्रैक्टर है, इसमें 6-00 x 16 फ्रंट टायर और 13-6 x 28 रियर टायर दिए गए हैं।

भारत में पॉवर ट्रैक 439 प्लस ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 6.70 लाख से 6.85 लाख रुपये निर्धारित की गई है। पॉवर ट्रैक 439 प्लस ट्रैक्टर

सोनालिका आरएक्स 42 4डब्ल्यूडी

Sonalika RX 42 4WD ट्रैक्टर में आपको 3 सिलेंडर वाला शक्तिशाली इंजन दिया जाता है, जो 42 HP उत्पन्न करता है। इसका इंजन आरपीएम 1800 है और यह ट्रैक्टर 2200 किलोग्राम भार उठाने की क्षमता के साथ आता है। इस सोनालिका ट्रैक्टर में Power स्टीयरिंग के साथ 8 Forward + 2 Reverse गियरबॉक्स प्रदान किया गया है। सोनालिका आरएक्स 42 ट्रैक्टर 4 WD ड्राइव में आता है। भारत में सोनालिका आरएक्स 42 4 डब्ल्यूडी ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 6.45 लाख से 7.86 लाख रुपये निर्धारित की गई है।

सॉलिस 4215 ई

Solis 4215 E ट्रैक्टर में आपको 3 सिलेंडर वाला Water Cooled इंजन प्रदान किया जाता है, जो 43 HP पावर उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर की 39.5 HP अधिकतम पीटीओ पावर है। साथ ही, इसका इंजन 1800 RPM उत्पन्न करता है। सॉलिस का यह ट्रैक्टर 2000 किलोग्राम तक भार उठाने की क्षमता के साथ आता है। इस ट्रैक्टर में च्वूमत स्टीयरिंग के साथ 10 Forward + 5 Reverse गियरबॉक्स प्रदान किया गया है। यह सॉलिस ट्रैक्टर 2WD ड्राइव में आता है, इसमें 6-00 x 16 फ्रंट टायर और 13-6 x 28 रियर टायर दिए जाते हैं। भारत में सॉलिस 4215 ई ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 6.60 लाख से 7.10 लाख रुपये है।

पॉवर ट्रैक 439 प्लस ट्रैक्टर

Powertrac कंपनी का यह Powertrac 439 Plus ट्रैक्टर 2340 CC क्षमता वाले 3 सिलेंडर Water Cooled इंजन के साथ आता है, जो 41 HP उत्पन्न करता है। इसका इंजन 2200 RPM उत्पन्न करता है और इसकी अधिकतम पीटीओ पावर 38.9 HP है। इस ट्रैक्टर की भार उठाने की क्षमता 1600 किलोग्राम निर्धारित की गई है। इस ट्रैक्टर में Power / Mechanical स्टीयरिंग के साथ 8 Forward + 2 Reverse गियरबॉक्स दिया जाता है।

यह एक 2 WD ट्रैक्टर है, इसमें 6-00 x 16 फ्रंट टायर और 13-6 x 28 रियर टायर दिए गए हैं। भारत में पॉवर ट्रैक 439 प्लस ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 6.70 लाख से 6.85 लाख रुपये निर्धारित की गई है।

न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स प्लस की विशेषताएं, फीचर्स और कीमत क्या–क्या हैं ?

आजकल के नए दौर में जमाना मशीनीकृत हो गया है। खेती में ट्रैक्टर किसान का सबसे बड़ा सहयोगी किसान है। इसलिए किसान को अप ने कृषि कार्यों को करने के लिए ट्रैक्टर की अत्यंत आवश्यकता होती है। अब ऐसे में अगर आप एक बेहतरीन प्रदर्शन वाला ट्रैक्टर खरीदने के इच्छुक हैं। अपने इस लेख में आज हम आपके लिए New Holland 3630 TX Plus ट्रैक्टर की जनकारी लेकर आए हैं। कंपनी का यह ट्रैक्टर 46 HP के साथ 2300 RPM उत्पन्न करने वाले 2991 सीसी इंजन के साथ आता है।

New Holland 3630 TX Plus की शानदार परफॉर्मेंस

New Holland कंपनी के ट्रैक्टर, हार्वेस्टर एवं अन्य कृषि यंत्र अपने शानदार परफॉर्मेंस की वजह से किसानों की पहली पंसद बने हुए है। New Holland ट्रैक्टर फ्यूल एफिशीएंट टेक्नोलॉजी वाले इंजन के साथ आते हैं, जो कम ईंधन खपत के साथ खेती के समस्त कार्यों को सुगम बनाते हैं। यदि आप भी एक किसान हैं और शानदार प्रदर्शन देने वाला ट्रैक्टर खरीदने का विचार बना रहे हैं। आज हम आपके लिए न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स प्लस ट्रैक्टर की जनकारी लेकर आए है। छमू भ्वससंदक कंपनी का यह ट्रैक्टर 46 HP के साथ 2300 RPM उत्पन्न करने वाले 2991 सीसी इंजन के साथ आता है।

न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स प्लस की क्या–क्या विशेषताऐं हैं ?

New Holland 3630 TX Plus ट्रैक्टर में आपको 2991 सीसी क्षमता वाला 3 सिलेंडर में Water Cooled इंजन देखने को मिल जाता है, जो 50 HP (हॉर्स पावर) उत्पन्न करता है। New Holland कंपनी का यह ट्रैक्टर 46 HP पावर अधिकतम पीटीओ के साथ आता है। इस न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर का इंजन 2300 आरपीएम उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर में आपको क्तल जलचम एयर फिल्टर दिखने को मिल जाता है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को 31.60 kmph फॉरवर्ड स्पीड और 14.86 ाउची रिवर्स स्पीड के साथ बाजार में पेश किया है। न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स प्लस ट्रैक्टर की भार उठाने की क्षमता 1700/2000 (Optional) निर्धारित की गई है। साथ ही, यह ट्रैक्टर 2080 किलोग्राम कुल भार के साथ आता है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को 2045 MM व्हीलबेस में तैयार किया है। इस ट्रैक्टर का ग्राउंड क्लीयरेंस 445 डड निर्धारित किया गया है।

न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स प्लस के फीचर्स ?

New Holland 3630 TX Plus ट्रैक्टर में आपको Power स्टीयरिंग दिखने को मिल जाता है। इस ट्रैक्टर के अंदर 8 Forward + 2 Reverse/ 12 Forward + 3 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स प्रदान किया गया है। न्यू हॉलैंड कंपनी के New Holland 3630 TX Plus ट्रैक्टर में Double Clutch with Independent Clutch Lever क्लच आता है। इसमें Fully Constant mesh / Partial Synchro mesh टाइप ट्रांसमिशन प्रदान किया गया है। न्यू हॉलैंड कंपनी का यह ट्रैक्टर Oil Immersed Multi Disc ब्रेक्स के साथ आपको देखने को मिल जाता है। न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर 4 WD मतलब फोर व्हील ड्राइव में आता है। इसमें 9-5 x 24 फ्रंट टायर और 14-9 x 28 / 16-9 x 28 रियर टायर दिए गए है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में आपको हाइड्रॉलिकली कंट्रोल वाल्व, स्काईवॉच™, आरओपीएस और कैनोपी, 12 + 3 क्रीपर स्पीड, हाई स्पीड एडिशनल पीटीओ, एडजस्टेबल फ्रंट एक्सल और भारी भार उठाने की क्षमता जैसे बेहतरीन फीचर्स दिखने को मिल जाते हैं।

न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स प्लस की क्या कीमत है?

भारत में New Holland 3630 TX Plus ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 8.20 लाख से 8.75 लाख रुपये रखी गई है। इस न्यू हॉलैंड 4WD ट्रैक्टर की ऑन रोड कीमत सभी राज्यों में आरटीओ रजिस्ट्रेशन और रोड टैक्स के चलते अलग हो सकती है। कंपनी अपने इस New Holland 3630 TX Plus 4wd ट्रैक्टर के साथ 6000 घंटे या 6 साल की वारंटी प्रदान करती है।

मौसमी व अन्य कृषि सुझाव

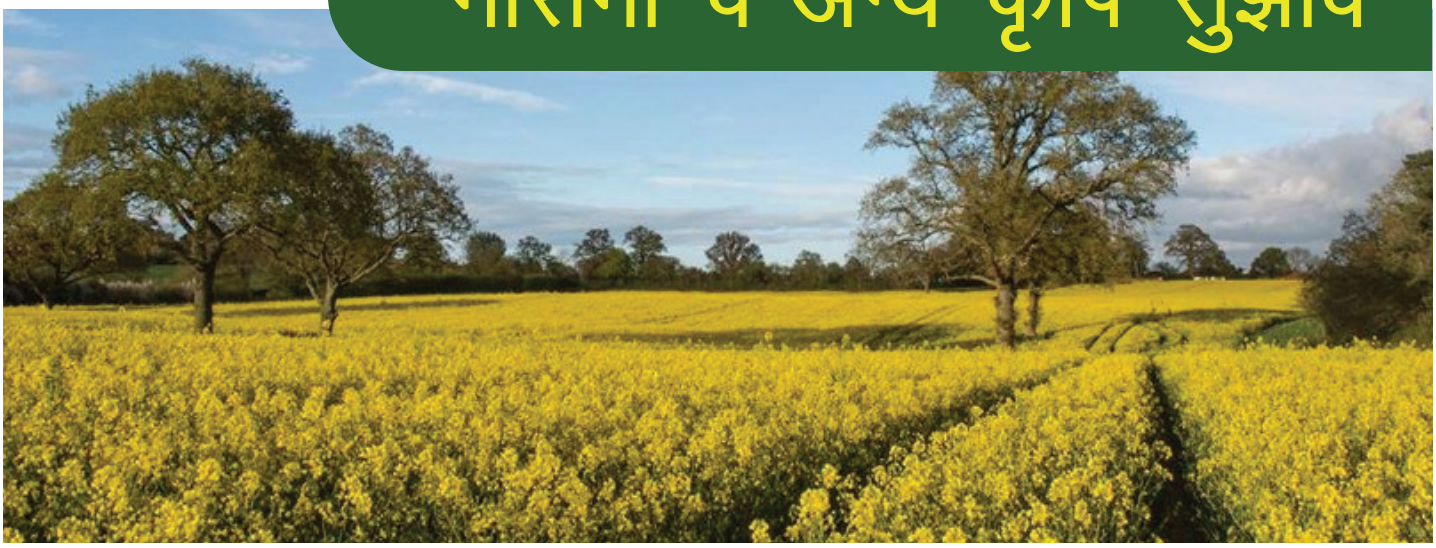

सरसों की फसल में उर्वरकों का इस तरह इस्तेमाल करें

सरसों की खेती मिश्रित रूप एवं बहु फसलीय फसल चक्र के जरिए सुगमता से कर सकते हैं। भारत के अधि. कांश राज्यों के कृषकों के द्वारा सरसों की खेती की जाती है। साथ ही, बाकी फसलों की भांति सरसों में भी पोषक तत्वों की जरूरत होती है, जिससे कृषकों को इसकी शानदार पैदावार हांसिल हो सके। सरसों रबी की प्रमुख तिलहनी फसल है, जिसका भारत की अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख स्थान है। सरसों (लाहा) कृषकों के लिए बेहद लोकप्रिय होती जा रही है। क्योंकि, इससे कम सिंचाई और लागत में दूसरी फसलों के मुकाबले ज्यादा फायदा हांसिल होता है।

किसान इसकी खेती मिश्रित रूप में एवं बहु फसलीय फसल चक्र में सहजता से कर सकते हैं। भारत साल में क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से इसकी खेती विशेषकर यूपी, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, आसाम, झारखंड़, बिहार, पंजाब, राजस्थान और मध्यप्रदेश में की जाती है। अन्य फसलों की भांति ही सरसों की फसल को बेहद विकास और शानदार उपज देने के लिए 17 पोषक तत्वों की जरूरत पड़ती है। यदि इसमें से किसी एक पोषक तत्व की भी कमी हो जाये तो पौधे अपनी संपूर्ण क्षमता से उत्पादन नहीं दे पाते हैं। नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश और गंधक सल्फर के साथ ही पर्याप्त मात्रा में सूक्ष्म तत्व (कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, लोहा, तांबा और मैंगनीज) भी ग्रहण करते हैं। सरसों वर्ग के पौधे बाकी तिलहनी फसलों के विपरीत ज्यादा मात्रा में सल्फर ग्रहण करते हैं।

राई–सरसों की फसल के अंदर शुष्क एवं सिंचित दोनों ही अवस्थाओं में खादों और उर्वरकों के इस्तेमाल के अनुकूल परिणाम हांसिल हुए हैं।

सरसों की फसल में रासायनिक उर्वरकों की कितनी मात्रा होती है

राई–सरसों से भरपूर उत्पादन लेने के लिए रासाय. निक उर्वरकों का संतुलित मात्रा में इस्तेमाल करने से पैदावार पर काफी अच्छा असर पड़ता है। उर्वरकों का इस्तेमाल मृदा परीक्षण के आधार पर करना ज्यादा उपयोगी साबित होगा। राई–सरसों को नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश जैसे प्राथमिक तत्वों के अतिरिक्त गंधव तत्व की आवश्यकता अन्य फसलों की तुलना में ज्यादा होती है। सामान्य सरसों में उर्वरकों का इस्तेमाल सिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन 120 किग्रा, फास्फोरस 60 किग्रा. एवं पोटाश 60 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करने से शानदार पैदावार हांसिल होती है।

फास्फोरस का कितनी मात्रा में उपयोग करें

फास्फोरस का इस्तेमाल सिंगल सुपर फास्फेट के तोर पर ज्यादा फायदेमंद होता है। क्योंकि, इससे सल्फर की उपलब्धता भी हो जाती है।

अगर सिंगल सुपर फास्फेट का इस्तेमाल न किया जाए तो सल्फर की उपलब्धता करने के लिए 40 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से गंधक का इस्तेमाल करना चाहिए। साथ ही, असिंचित क्षेत्रों में उपयुक्त उर्वरकों की आधी मात्रा बेसल ड्रेसिंग के तोर पर इस्तेमाल की जाए। अगर डी.ए.पी. का इस्तेमाल किया जाता है, तो इसके साथ बिजाई के समय 200 किग्रा. जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना फसल के लिए फायदेमंद होता है। साथ ही, शानदार उत्पादन हांसिल करने के लिए 60 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद का उपयोग करना चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फास्फेट एवं पोटाश की पूर्ण मात्रा बिजाई के समय कूड़ों में बीज से 2–3 सेमी. नीचे नाई या चोगों से दिया जाए। नाइट्रोजन की शेष मात्रा पहली सिंचाई (बुवाई के 25–30 दिन बाद) के बाद टाप ड्रेसिंग द्वारा दी जाए।

बढ़ती ठंड के मौसम में फसलों पर लग रहे कीड़ों से कैसे बचाऐं फसल

सर्दियों के दिनों में भी फसलों पर कीड़ों का प्रभाव देखने को मिल सकता है। ऐसी स्थिति में किसान भाइयों को कुछ आवश्यक बातों का खास ध्यान रखना पड़ेगा। बतादें, कि कुछ कृषकों का मानना है, कि सर्दियों के दौरान फसलों के अंदर कीट नहीं लगते हैं। परंतु, सच ये है कि सर्दी के मौसम में भी आपकी फसल पर कीड़े लग सकते हैं। कीड़ों से फल का संरक्षण करने के लिए आपको कुछ आवश्यक बातों का ध्यान रखना पड़ेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक, सर्दी के दौरान फसलों में कीट लगने की दिक्कत एक सामान्य बात है। बतादें, कि इस समय तापमान कम होता है, इस कीटों के लगने की घटनाएं कम हो जाती हैं। परंतु, ये पूरी तरह से समाप्त नहीं होते हैं। कुछ कीड़े सर्दियों में भी फसल को काफी हानि पहुँच सकती है, जिनसे संरक्षण के लिए कृषक कुछ विशेष बातों का ध्यान रख सकते हैं।

किसान कृषि विशेषज्ञों की निगरानी में करें खेती

सर्दियों के मौसम में किसान भाई फसलों की नियमित तौर पर निगरानी करें। कीट लगने के शुरुआती लक्षणों पर विशेष ध्यान दें। साथ ही, किसान रोग तथा कीटों के नियंत्रण के लिए आवश्यक कार्य करें। यदि आपके खेतों में खड़ी फसल में कीड़े लग गए हैं, तो आवश्यक कीटनाशकों का उचित समय पर उपयोग करें। बतादें, कि उन्हें उचित मात्रा में छिड़कें, जिसके लिए कृषक भाई कृषि विशेषज्ञों की सहायता ले सकते हैं।

किसान भाई क्या छिड़काव कर सकते है ?

विशेषज्ञों का कहना है, कि मौसम में परिवर्तन की वजह फसलों पर कीड़े लग सकते हैं। किसान भाई कीड़ों से सहूलियत पाने के लिए ट्राईकोडर्मा, हारजोनियम दवा का छिड़काव कर सकते हैं। कीड़े लगने से फसलों की पैदावार पर प्रभाव पड़ सकता है। कीटनाशक दवा का फसल पर छिड़काव करने से इस चुनौती को दूर किया जा सकता है। भारत में सर्दियों का मौसम अक्टूबर से लगाकर मार्च तक रहता है। ये तापमान रबी की फसलों के लिए अत्यंत अनुकूल होता है। रबी सीजन की प्रमुख फसलें बाजरा, मटर, सरसों, टमाटर, गेहूं, जौ और चना इत्यादि है ?

गेहूं व जौ की फसल को चेपा (अल) से इस प्रकार बचाऐं

हरियाणा कृषि विभाग की तरफ से गेहूं और जौ की फसल में लगने वाले चेपा कीट से जुड़ी आवश्यक सूचना जारी की है। इस कीट के बच्चे व प्रौढ़ पत्तों से रस चूसकर पौधों को काफी कमजोर कर देते हैं। साथ ही, उसके विकास को प्रतिबाधित कर देते हैं। भारत के कृषकों के द्वारा गेहूं व जौ की फसल / Wheat and Barley Crops को सबसे ज्यादा किया जाता है। क्योंकि, यह दोनों ही फसलें विश्वभर में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाली साबुत अनाज फसलें हैं।

गेहूं व जौ की खेती राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और जम्मू–कश्मीर में विशेष रूप से की जाती है। किसान अपनी फसल से शानदार उत्पादन हांसिल करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यों को करते हैं। यदि देखा जाए तो गेहूं व जौ की फसल में विभिन्न प्रकार के रोग व कीट लगने की संभावना काफी ज्यादा होती है। वास्तविकता में गेहूं व जौ में चेपा (अल) का आक्रमण ज्यादा देखा गया है। चेपा फसल को पूर्ण रूप से खत्म कर सकता है।

गेहूं व जौ की फसल को चेपा (अल) से बचाने की प्रक्रिया

गेहूं व जौ की फसलों में चेपा (अल) का आक्रमण होने पर इस कीट के बच्चे व प्रौढ़ पत्तों से रस चूसकर पौधों को कमजोर कर देते हैं. इसके नियंत्रण के लिए 500 मि.ली. मैलाथियान 50 ई. सी. को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़काव करें. किसान चाहे तो इस कीट से अपनी फसल को सुरक्षित रखने के लिए अपने नजदीकी कृषि विभाग के अधिकारियों से भी संपर्क कर सकते हैं।

चेपा (अल) से आप क्या समझते हैं और ये कैसा होता है ?

चेपा एक प्रकार का कीट होता है, जो गेहूं व जौ की फसल पर प्रत्यक्ष तौर पर आक्रमण करता है। यदि यह कीट एक बार पौधे में लग जाता है, तो यह पौधे के रस को आहिस्ते–आहिस्ते चूसकर उसको काफी ज्यादा कमजोर कर देता है। इसकी वजह से पौधे का सही ढ़ंग से विकास नहीं हो पाता है। अगर देखा जाए तो चेपा कीट फसल में नवंबर से फरवरी माह के मध्य अधिकांश देखने को मिलता है। यह कीट सर्व प्रथम फसल के सबसे नाजुक व कमजोर भागों को अपनी चपेट में लेता है। फिर धीरे–धीरे पूरी फसल के अंदर फैल जाता है। चेपा कीट मच्छर की भाँति नजर आता है, यह दिखने में पीले, भूरे या फिर काले रंग के कीड़े की भाँति ही होता है।

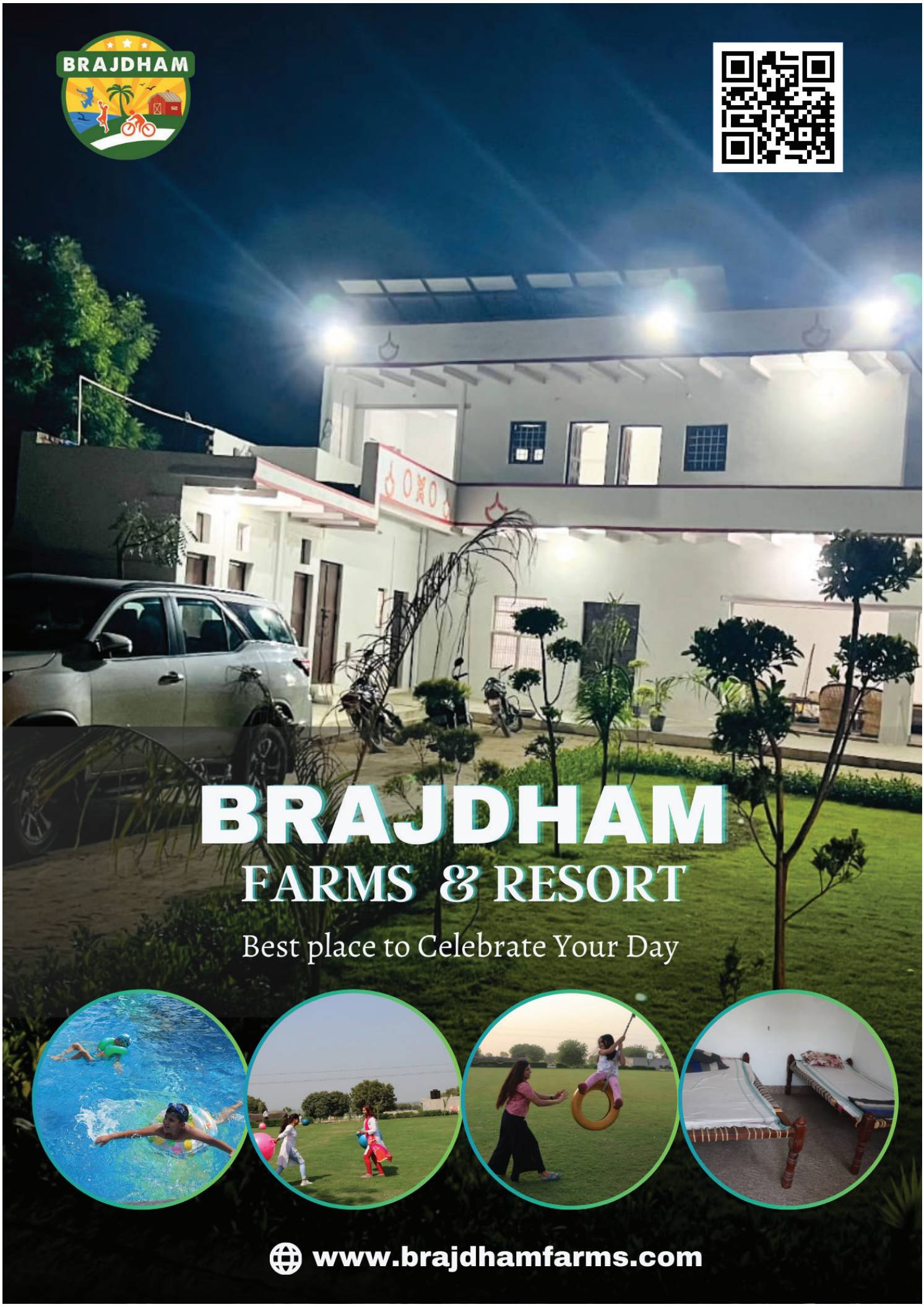

BRAJDHAM
BRAJDHAM
FARMS & RESORT
Best place to Celebrate Your Day
www.brajdhamfarms.com

सम्पादकीय

किसान एवं कृषि वैज्ञानिकों की मौजूदगी में मेरीखेती का रीलॉन्च किया गया

18 जनवरी गुरूवार को मेरीखेती का रीलॉन्च साहिबाबाद विधायक सुनील शर्मा जी द्वारा किया गया। मेरीखेती के रिलॉन्च कार्यक्रम में श्रचै डबास, सीबी सिंह, डॉ हरीश, डॉ विपिन कुमार जैसे पूसा के कई वरिष्ठ व अनुभवी कृषि वैज्ञानिक व प्रगतिशील किसान शामिल हुए। मेरीखेती फाउंडर कृष्ण पाठक जी ने कंपनी के सफर के बारे में बताया। कृषि वैज्ञानिकों और किसानों को सम्मानित भी किया गया।

Merikheti.com किसानों के लिए हर माह किसान पंचायत आयोजित कराती है

मेरीखेतीडॉटकॉम किसान और कृषि विशेषज्ञों को एक दूसरे से सवाल जवाब करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। जहां किसान भाई कृषि समस्याओं से संबंधित समाधान प्राप्त कर सकते हैं। मेरीखेती की टीम किसानों को सजग और जागरूक करने के साथ–साथ उनको अच्छी जानकारी मुहैय्या कराने का कार्य प्राणपन से करती है। मेरीखेती टीम का केवल एक ही उद्देश्य है, कि किसानों को प्रमाणित और बेहतर जानकारी प्रदान करके उनको एक लाभकारी कृषि प्रणाली की तरफ अग्रसर किया जा सके। केवल इतना ही नहीं देशभर में जहां कहीं भी कृषि से संबंधित एवं किसानों के हित में कोई कार्यक्रम होता है, तो मेरीखेती की टीम उसे कवर करने जरूर पहुँचती है। प्रति माह किसान पंचायत होने से पूर्व उसकी जानकारी मेरीखेती की आधिकारिक फेसबुक पर दे दी जाती है।

किसानों को जागरूक होने की बेहद आवश्यकता है

किसान भाइयों को जागरूक होना ही पड़ेगा अन्यथा उनके हालात बदल नहीं पाएंगे। किसान यदि सही सूझ–बूझ और बेहतर तरीके से कृषि करें तो उनको काफी उन्नति और प्रगति हांसिल हो सकती है। मेरीखेती डॉट कॉम वेब पोर्टल पर हम कृषि से जुड़ी सही और सटीक जानकारी किसान भाइयों को प्रदान करते हैं। साथ ही, कृषि से संबंधित किसानों की समस्याओं का भी हल यथावत रूप से उनको देने का भी कार्य करते हैं। हम किसानों के लिए समर्पित भाव से कार्य करते आए हैं। किसानों के विकास को प्राथमिकता में रखते हुए हम किसानों को बेहतर जानकारी देने से लेकर प्रति माह किसान पंचायत का आयोजन एवं अन्य हितकर कार्य करते हैं।

रुद्राक्ष के पौधे का रोपण कब, कैसे और क्यों किया जाता है ?

आज हम आपको मेरीखेती के इस लेख में रुद्राक्ष के पौधे के विषय में जानकारी देंगे। जैसा कि हम सब जानते हैं, कि हिंदू धर्म में रुद्राक्ष का एक विशेष आध्यात्मिक महत्व है। रुद्राक्ष को लेकर बेहद अहम बातें हैं, जिनको जानना आपके लिए काफी अच्छा रहेगा। अधिकांश लोग अपने घर में ही रुद्राक्ष का पौधा लगाते हैं, जिससे कि उन्हें उनके घर पर ही एक मुखी रुद्राक्ष हांसिल हो सके। परंतु, इस बात की बिल्कुल गारंटी नहीं होती है, कि इस पौधे से एक मुखी रुद्राक्ष मिले। परंतु, आप कुछ टिप्स का अनुपालन कर रहे हैं, जिससे इसकी संभावना काफी बढ़ जाती है। अगर आप एक मुखी रुद्राक्ष हांसिल कर सकते हैं। हालांकि, इस बात का किसी भी प्रकार का वैज्ञानिक प्रमाण देखने को नहीं मिला है।

रुद्राक्ष पौधे के बेहतर विकास हेतु उपयुक्त मृदा कैसी होती है ?

रुद्राक्ष पौधे के लिए उपयुक्त मृदा का चयन करें। रुद्राक्ष के पौधे के लिए हल्की और पोषक तत्वों से भरपूर सूखा वाली मिट्टी का प्रयोग करें। उसके बाद एक गमला लें, जो कि पौधे के आकार के समतुल्य हो। बतादें, कि गमला इतना ज्यादा बड़ा होना चाहिए कि पौधे की जड़ों को फैलने के लिए समुचित जगह सुनिश्चित हो सके। गमले के तल में छेद होने बेहद जरूरी हैं, जिससे की जल निकासी हो सके। आप गमले के अंदर मृदा भरें एवं पौधे को उसमें लगा दें। तत्पश्चात पौधे को बेहतर ढ़ंग से पानी डालें।

रुद्राक्ष के पौधे का रोपण किस समय करना उपयुक्त माना जाता है ?

रुद्राक्ष के पौधे का रोपण करने का अच्छा वक्त सर्दियां हो सकती हैं। क्योंकि, इसको विकास करने के लिए ठंडक की अत्यंत आवश्यकता होती है। इस पौधे को शेड के अंदर रखें। यदि आप बेहद ही गर्म जगह पर रहते हैं। अगर तापमान 35 डिग्री से ज्यादा है, तो इसे दोपहर की सीधी धूप से संरक्षित करें। जिससे कि यह सुगमता से फल–फूल सकें। इसको पूर्ण रूप से धूप में रखें। प्रकाश और हवाई जगहें उसको अच्छी लगती हैं। परंतु, तीव्र धूप उसके लिए अनुकूल नहीं मानी जाती है।

रुद्राक्ष उत्पादन के लिए इन बातों का विशेष ख्याल रखें

- पौधे को बेहतर रूप से सूखा हुआ ही रखें।
- पौधे को सुबह अथवा शाम के वक्त धूप में रखें।
- पौधे को प्रति माह जैविक खाद दें।
- पौधे की नियमित तौर पर जांच करें अथवा किसी भी बीमारी या कीटों के संक्रमण का शीघ्र उपचार करें।

फसल की कटाई के बाद भंडारण की सम्पूर्ण जानकारी, जाने यहां

किसानो द्वारा ज्यादातर फसल का भंडारण घरों में विभिन्न तरीको से किया जाता हैं। फसल की कटाई के बाद उसका भंडारण करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। फसल का स्टॉक नमी वाली जगहों पर न करें, क्यूंकि नमी की वजह से फसल में दीमक और अन्य बैक्टीरिया जैसे रोगों के लगने की संभावनाएं होती है। फसल का स्टॉक यदि बोरों में किया जाता हैं ,तो नीचे फर्श पर लकड़ी के तख्ते ,या फिर चटाई आदि बिछा दी जाती हैं ताकि फसल सुरक्षित रह सके।

कटाई के बाद फसल का भण्डारण कैसे करे

फसल की कटाई के बाद किसानो द्वारा कुछ फसल को बीज के लिए और कुछ फसल को अपने उपयोग के लिए स्टोर कर लिया जाता है। किसानो द्वारा जो फसल अपने लिए रखी जाती हैं ,उसका भण्डारण वो ड्रम या अन्य किसी बंद मुँह वाले कंटेनर में करते हैं। ताकि जरुरत पड़ने पर उसका उपभोग किया जा सके।

फसल का भण्डारण करते समय बरती जाने वाली सावधानियां

बीज के लिए जो भण्डारण किया जाता हैं , उसमे कीटनाशक का उपयोग किया जाता हैं। ताकि उसे आगे की बुवाई के लिए सुरक्षित रखा जा सके। ज्यादातर किसानो द्वारा फसल का भण्डारण जूट के थैलो या बोरियो में किया जाता है।

भण्डारण से पहले फसल को सूर्य की रौशनी में सूखने दे

फसल की कटाई का काम ज्यादातर मशीनो द्वारा किया जाता हैं ,जिसकी वजह से फसल में नमी होती हैं। यदि ऐसी ही फसल का भण्डारण किसान द्वारा किया जाता हैं तो फसल के खराब होने के ज्यादा अनुमान रहते है। इसीलिए फसल की कटाई के बाद ,कुछ दिनों के लिए फसल को सूर्य की रौशनी में सूखने दे ,ताकि उसमे नमी न रहे।

अनाज को अच्छे से साफ कर ले

फसल की कटाई के वक्त बहुत से दाने टूट जाते हैं या फिर उसमे धूल मिट्टी हो सकती हैं अनावश्यक तिनके आ जाते हैं, जो की फसल की रौनक को कम करते है। फसल को स्टोर करने से पहले उसकी अच्छे से सफाई कर ले ,ताकि फसल को फफूंद जैसी समस्याओं से बचाया जा सके।

फसल का स्टॉक साफ बोरों में करें

कभी भी फसल का भण्डारण पुराने और पहले से इस्तेमाल किये गए बोरों में न करें, क्यूंकि फसल के खराब होने के और रोग लगने की ज्यादा संभावनाएं होती है। यदि किसानो द्वारा पुराने बोरों का उपयोग किया जा रहा हैं तो उन्हें अच्छे से धो लेना चाहिए। ताकि फसल में कोई भी रोग न लगे।

स्टॉक की गयी फसल के बोरों को दीवार से सटा कर न रखें

किसानो द्वारा फसल का भण्डारण जिन बोरों में किया जाता हैं उन्हें दीवार से सटा कर न रखें ,क्यूंकि बारिश आदि के मौसम में दीवारों पर सीलन या नमी आ जाती हैं ,जिसकी वजह से फसल पर भी इसका प्रभाव पड सकता हैं।

फसल को कीटों से बचाने के लिए नीम के पाउडर का इस्तेमाल करें

कभी कभी स्टॉक की गयी फसल में घुन आदि जैसे कीट लग जाते हैं ,जो फसल को अंदर से खोखला कर देते है। इन कीटों से बचने के लिए नीम से बने पाउडर का इस्तेमाल भी किसानो द्वारा किया जाता हैं। जिससे स्टॉक की गयी फसल को सुरक्षित रखा जा सके।

फसल का स्टॉक यदि बोरों में किया जाता हैं, तो निचे फर्श पर लकड़ी के तख्ते ,या फिर चटाई आदि बिछा दी जाती हैं ताकि फसल सुरक्षित रह सके। भंडारगृह को मैलाथियान के घोल से अच्छे से धो ले

फसल का भण्डारण करते समय याद रखे , फसल को साफ जगह पर ही स्टोर करें। भंडारगृह में फसल का स्टॉक करने से पहले उसे मैलाथियान में पानी मिलाकर उसका घोल बनाकर भंडारगृह को धो दे। इससे फसल के खराब होने की बहुत ही कम सम्भावनाये होती है। फसल का स्टॉक करना बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। फसलों के सुरक्षित भण्डारण के लिए बहुत सी वैज्ञानिक तकनीके अपनायी जाती हैं। इन तकनीकों की वजह से फसल में लगने वाले फफूंद, कीटों आदि से बचाया जा सकता है। लेकिन कभी कभी लोगों को भण्डारण की सम्पूर्ण जानकारी न होने की वजह से आधी से ज्यादा फसल का नुक्सान हो जाता हैं।

भण्डारण के दौरान फसल को किस्से संरक्षित रखना चाहिए

जब किसानो द्वारा फसल का भंडारण किया जाता हैं तो, फसल को नमी, कीड़ों और चूहों से बचाना चाहिए। फसल में अगर ज्यादा नमी होती हैं तो ये सूक्ष्मजीवों के विकास को बढ़ावा देती है।

इसी वजह से भण्डारण करना आवश्यक बताया जाता हैं। ताकि फसल को लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकें। फसलों को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए भण्डारण किया जाता हैं। छोटे किसानो द्वारा सिर्फ अपने उपभोग के लिए फसल का उत्पादन किया जाता है, लेकिन बड़े पैमाने पर फसल का उत्पादन सिर्फ विपणन के लिए किया जाता हैं। भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए भण्डारण किया जाता है। फसलों का भण्डारण ज्यादातर प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए भी किया जाता हैं ,जैसे बाढ़ आना ,सूखा पड़ना आदि। फसलों के भंडारण के लिए सही स्थान की व्यवस्था होनी चाहिए। भण्डारण करते समय ध्यान रहे फसल में नमी न हो , नमी की वजह से पूरी फसल खराब हो सकती हैं।

वैज्ञानिकों ने गेहूं की फसल को गर्मी के तनाव से बचने के लिए हीट टॉलरेंट किस्में विकसित की

विभिन्न जलवायु खतरों में से गर्मी का तनाव सबसे महत्वपूर्ण है, जो फसल उत्पादन को बाधित करता है। प्रजनन चरण के दौरान गर्मी से संबंधित क्षति फसल की उपज को बहुत नुकसान पहुंचाती है। गेहूं में टर्मिनल हीट स्ट्रेस से मॉर्फोफिजियोलॉजिकल बदलाव, जैव रासायनिक व्यवधान और आनुवंशिक क्षमता में कमी आती है। गेहूं की फसल में गर्मी का तनाव जड़ों और टहनियों का निर्माण, डबल रिज चरण पर प्रभाव और वानस्पतिक चरण में प्रारंभिक बायोमास पर भी प्रभाव डालती है।

गर्मी के तनाव के अंतिम खराब परिणामों में अनाज की मात्रा, वजन में कमी, धीमी अनाज भरने की दर, अनाज की गुणवत्ता में कमी और अनाज भरने की अवधि में कमी शामिल है। आज के आधुनिक युग में जहां तापमान में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। सर्दी के मौसम में भी गर्मी होती है जिस कारन से रबी की फसल उत्पादन पर बहुत बुरा प्रभाव पद रहा है। जिस कारण से किसानों को भी बहुत नुकसान का सामना करना पड़ रहा है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञा. निकों ने विकसित की हीट टॉलरेंट किस्में

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने गेहूं की फसल के उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए गेहूं की नई किस्में विकसित की है। ये किस्में मार्च अप्रैल के महीने में तापमान में होने वाली वृद्धि में भी अच्छी उपज दे सकती है। इन किस्मों में ऐसे जीन डालें गए है जो की अधिक तापमान में भी फसल की उत्पादकता में कमी नहीं आने देंगे। इन किस्मों की बुवाई किसान समय और देरी से भी कर सकते है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक से बातचीत के दौरान पता चला है की उन्होंने गेहूं की बहुत सारी किस्में विकसित की है जो की समय पर बुवाई और देरी से बुवाई के लिए उचित है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित गेहूं की अधिक उपज देने वाली किस्में

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने कई किस्में विकसित की है जो की मार्च और अप्रैल की गर्मी को सहन करके भी अच्छी उपज देगी। कृषि वैज्ञा. निकों ने कई नई किस्में विकसित की है जिनकी बुवाई से किसानों को अच्छा उत्पादन प्राप्त होगा। इन किस्मों के नाम आपको निचे देखने को मिलेंगे। HD-3117, HD-3059, HD-3298, HD-3369, HD-3271, HI-1634, HI-1633, HI-1621, HD-3118 (पूसा वत्सला) ये सभी किस्में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित की गयी है। इन किस्मों में मार्च अप्रैल के अधिक तापमान को सहने की क्षमता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों के अनुसार कृषि प्रबंधन तकनीकों को आपके भी गेहूं में गर्मी के तनाव को कम किया जा सकता है

कुछ कृषि प्रबंधन तकनीकों में बदलाव करके भी किसान गेहूं की फसल में गर्मी के तनाव को कम कर सकते है – जैसे की मिट्टी की नमी की हानि को कम करने के लिए संरक्षण खेती, उर्वरकों की संतुलित खुराक का उपयोग करना, बुआई की अवधि और तरीकों को बदलना आदि अत्यधिक गर्मी के प्रभाव को कम करने के लिए बाहरी संरक्षक का उपयोग करना, गेहूं को गर्म वातावरण में उगाने के लिए बेहतर तरीके से तैयार किया जा सकता है।

इनके अलावा गर्मी के तनाव के कारण पानी की कमी को कम करने के लिए मल्चिंग एक अच्छा विकल्प हो सकता है, खासकर वर्षा आधारित क्षेत्रों में जहां पानी की उपल. ब्धता एक गंभीर चिंता का विषय है। जैविक मल्च मिट्टी की नमी बनाए रखने, पौधों की वृद्धि और नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में सुधार करने में मदद करते हैं।

भारत के उत्तर–पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में, जीरो टिलेज तकनीक का उपयोग करके चावल के ठूंठों की उपस्थिति में गेहूं बोने से पानी और मिट्टी के पोषक तत्वों के संरक्षण में मदद मिलती है और खरपतवार की घटनाओं को कम किया जाता है। इससे गेहूं की फसल को अंतिम गर्मी के तनाव के अनुकूल बनाया जाता है और गेहूं की फसल के समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।गेहूं की लंबी किस्मों की अनुशंसित बुआई समय से अधिक देरी करने से फसल को प्रजनन के बाद के चरणों में गर्मी के तनाव का सामना करना पड़ सकता है जो अंततः उपज और अनाज की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसलिए किसी भी कीमत पर गेहूं की समय पर बुवाई की जाने वाली किस्मों की देर से बुआई करने से बचना चाहिए। जल्दी पकने वाली और लंबी दाना भरने की अवधि वाली किस्मों के रोपण से टर्मिनल ताप तनाव के प्रभाव से बचा जा सकता है।

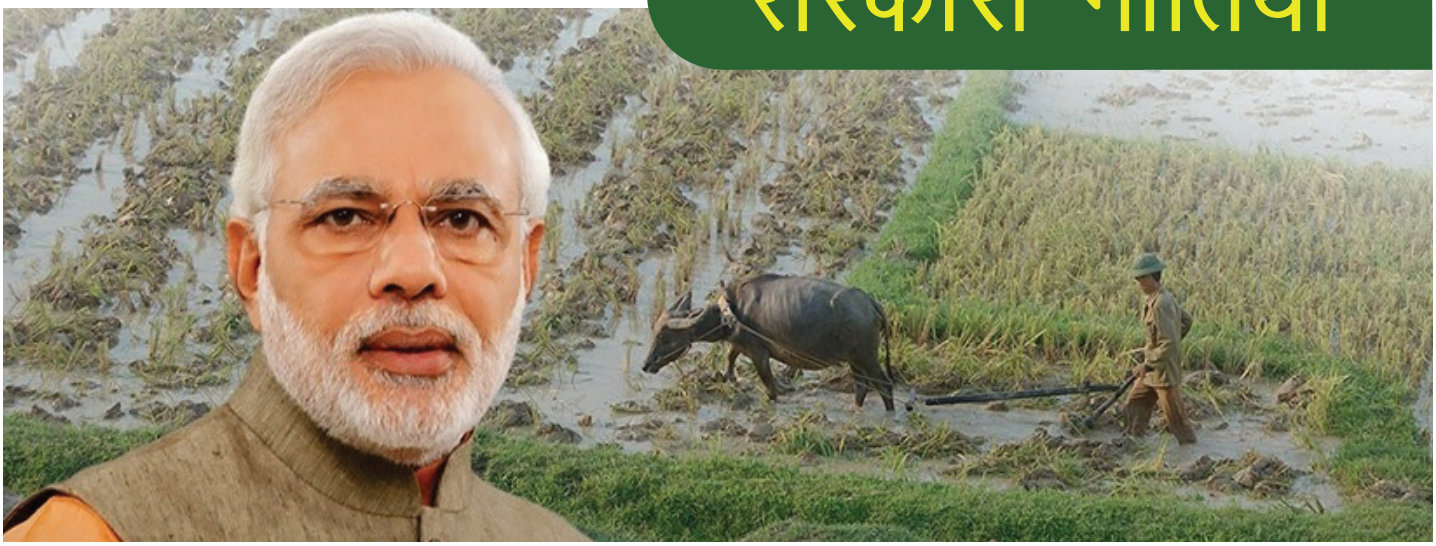

Pm Kisan Yojana: पीएम किसान योजना की 16वीं किस्त को लेकर अहम जानकारी

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना केंद्र सरकार की कई अहम योजनाओं में से एक है। इस योजना के तहत किसान भाइयों को अधिक रुपये मिल सकते हैं। योजना का फायदा पाने के लिए किसान भाई ई–केवाईसी अवश्य करा लें। भारत ही नहीं विश्व की सबसे बड़ी डीबीटी योजना में शामिल प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का फायदा भारत भर के करोड़ो कृषकों को मिल रहा है। अब तक किसानों को इस योजना के अंतर्गत 6 हजार रुपये प्रदान किए जाते हैं, जिसे बढ़ाने की बात विगत दिनों सामने आई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए घोषणा की गई थी, कि राजस्थान में बीजेपी सरकार बनने पर पीएम किसान योजना के लाभार्थी को वार्षिक 12,000 रुपये प्रदान किए जाऐंगे।

किसानों को 16 वीं किस्त की बड़ी ही बेसब्री से प्रतीक्षा है।

फिलहाल, पीएम किसान योजना के माध्यम से किसान भाइयों को 6 हजार रुपये मुहैय्या कराऐ जाते थे। इस योजना के अंतर्गत किसान भाइयों को तीन समान किस्तों में 2–2 हजार रुपये हस्तांतरित किए जाते हैं। यह किस्त हर चार महीने के पश्चात भेजी जाती है। किसानों को 16 वीं किस्त की बड़ी ही बेसब्री से प्रतीक्षा है। योजना का फायदा उठाने के लिए किसान भाई आवेदन पत्र बेहतर तरीके से भरें। साथ ही, किसान भाई ई–केवाईसी अवश्य करा लें।

इन राज्यों के कृषकों को लाभ मिलने की आशा

- छत्तीसगढ़
- झारखंड
- राजस्थान
- गुजरात

कृषक भाई इस प्रकार ई–केवाईसी की प्रक्रिया पूर्ण करें

सर्व प्रथम पीएम किसान सम्मान निधि योजना की आधिकारिक वेबसाइट ीजजचेरूध्ध्चउापेंद.हवअ.पदध पर जाना पड़ेगा। यहां होम पेज पर आपको फार्मर कॉर्नर का विकल्प और ई–केवाईसी का विकल्प मिलेगा। इस पर क्लिक करना चाहिए। ऐसा करते ही आपके सामने ओटीपी पर आधारित एक बॉक्स खुल जाएगा।आपको यहां पर अपना आधार नंबर दर्ज करना होगा। इसके बाद में आपका मोबाइल नंबर मांगा जाऐगा। इसके पश्चात आपको नीचे व्ज्ब् का विकल्प मिलेगा, इस पर क्लिक करना पड़ेगा। ऐसा करने पर आपके पंजीकृत मोबाइल पर एक ओटीपी भेजा जाऐगा। आपको वेबसाइट के बॉक्स में यह ओटीपी नंबर डालकर सबमिट करना होगा। आपको यहां दी गई संख्या पर एक ओटीपी भेजा जाएगा। ऐसा करते ही आपकी ई–केवाईसी प्रक्रिया पूर्ण हो जाएगी।

राज्य में लोअर सुकटेल सिंचाई परियोजना की शुरुआत, किसान और कृषि की बदलेगी तस्वीर

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने बुधवार को लोअर सुकटेल सिंचाई परियोजना को बोलांगीर एवं राज्य के लोगों को समर्पित किया। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि यह परियोजना विभिन्न कारणों से दो दशकों से लंबे वक्त से लंबित पड़ी थी। इससे बोलांगीर नगर पालिका और पटनागढ़ एनएसी की पेयजल जरूरतों को पूरा किया जाएगा। यह परियोजना 203 गांवों की तकरीबन 1.00 लाख एकड़ (40000 हेक्टेयर) भूमि की सिंचाई करने की भूमिका निभाऐगी। अनुमान के तौर पर तकरीबन 75,000 किसान लाभान्वित होंगे। यह काफी बड़ा काम है, क्योंकि बोलांगीर सदैव ओडिशा का एक सूखाग्रस्त क्षेत्र रहा है। जहां प्रति वर्ष औसतन 110 सेमी बरसात होती है। बोलांगीर में महज 31: फीसद भूमि सिंचित है। इस वजह से इसको सूखा, गरीबी और संकटग्रस्त इलाके के तौर पर जाना जाता है।

पेयजल की आपूर्ति भी सुनिश्चित होगी

इस परियोजना के तहत बोलांगीर नगर पालिका और पटनागढ़ एनएसी की पेयजल आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाएगा। इससे उद्योग एवं पर्यटन को भी काफी फायदा मिलेगा। सीएम नवीन पटनायक ने 2019 में फैसला लिया कि इस परियोजना को 5T पहल के अंतर्गत लिया जाएगा। साथ ही, स्मार्ट तकनीक और टीम वर्क के साथ इसमें तीव्रता लाई जाएगी।

अंडरग्राउंड पाइपलाइनों का इस्तेमाल किया जा रहा है

सिंचाई के पानी की आपूर्ति के लिए अंडरग्राउंड पाइपलाइनों का इस्तेमाल किया जा रहा है, जो राज्य में इस तरह का यह पहला मामला है। यह पानी को रिसाव और बाकी बर्बादी से बचाऐगा। परियोजना को वक्त पर पूर्ण करने के लिए, स्पिलवे डेक स्लैब के लिए आरसीसी की जगह मिश्रित गर्डर का इस्तेमाल किया गया है। पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण (एससीएडीए) के जरिए दूर से इसको नियंत्रण करने के लिए ऑटोमेटिक रेडियल स्पिलवे गेट लगाए गए हैं।

परियोजना से सैकड़ों गांवों की जमीन को सिंचाई हेतु पानी मिलेगा

बतादें, कि इस परियोजना को सूक्ष्म सिंचाई वाला बनाने के लिए बनाया गया है। यह भारत की सबसे ज्यादा मॉडर्न परियोजनाओं में से एक है। 203 गांवों की तकरीबन 1.00 लाख एकड़ (40000 हेक्टेयर) भूमि सिंचित होगी। इससे करीब 75,000 कृषकों को फायदा होगा और बोलांगीर नगर पालिका को पीने का पानी उपलब्ध किया जाऐगा। इसके चलते वर्षभर कृषि संबंधी नौकरियों के अवसर मिलेंगे। साथ ही, कृषि आमदनी में इजाफा, सामाजिक–आर्थिक बेहतरी और रिवर्स माइग्रेशन में भूमिका निभाएगी। इसके अतिरिक्त बागवानी, कृषि–उद्योग तथा लघु उद्योग, पर्यटन इत्यादि को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

लाखों एकड़ भूमि में सिंचाई की जा सकेगी

वर्तमान में नवीन पटनायक सरकार ने कालाहांडी जनपद को फायदा पहुंचाने वाली ऊपरी इंद्रावती लिफ्ट नहर की भांति विभिन्न बड़ी जल इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं समर्पित की हैं। इससे निचले इंद्र से नुआपाड़ा एवं बोलांगीर जन. पदों को फायदा हो रहा है। बतादें, कि इससे हल्दिया, मयूरभंज, बालासोर, मयूरभंज और कोरापुट जनपदों को फायदा होगा। ये परियोजनाएं कुल मिलाकर 3.64 लाख एकड़ (1.47 लाख हेक्टेयर) को सिंचाई की सुविधा प्रदान करेगी।

केंद्र सरकार ने तुअर दाल के लिए वेब पोर्टल लांच किया, किसानों को समय पर मिलेगा दाल का अच्छा भाव

भारत के कृषकों को तुअर दाल का समुचित मूल्य मुहैय्या कराने के लिए भारत सरकार ने नई दिल्ली में Tur Dal Procurement Portal को लॉन्च कर दिया। इस वेब पोर्टल में कृषकों की सुविधाओं के लिए विभिन्न भाषाएं सम्मिलित की गई हैं। सरकार ने कृषकों के लिए एक बड़ी खुशखबरी दी है। दरअसल, सरकार ने आज मतलब कि गुरुवार के दिन तुअर दाल की खरीद के लिए वेब पोर्टल की शुरुआत की है। दिल्ली में दलहन की आत्मनिर्भरता पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित किया गया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "आत्मनिर्भर भारत" के दृष्टिकोण की दिशा में एक और शानदार कदम उठाते हुए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने तुअर उत्पादक किसानों के पंजीकरण, खरीद और भुगतान के लिए वेब पोर्टल का लोकार्पण किया गया। अब इससे किसान अपनी दाल की ऑनला. इन बिक्री करके सीधे भुगतान की राशि अपने खाते में प्राप्त कर सकते हैं। इस पोर्टल का नाम Tur Dal Procurement Portal निर्धारित किया गया है। सरकार की इस नवीन कवायद से घरेलू दाल उपज को प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही, आयात निर्भ. रता में भी कमी देखने को मिलेगी।

Tur Dal Procurement Portal का प्रमुख लक्ष्य क्या है ?

सरकार की इस कवायद का प्रमुख लक्ष्य तुअर दाल उत्पादकों को NAFED एवं NCCF द्वारा खरीद, सुव्यवस्थित प्रक्रियाओं एवं सीधे बैंक हस्तांतरण के जरिए शानदार कीमतों के साथ मजबूत बनाना है, जिससे घरेलू दाल उपज को प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही, आयात निर्भरता काफी कम होगी। इसके अंतर्गत उपभोक्ता मामले विभाग, भारत सरकार के दिशा निर्देशों के मुताबिक नेफेड एवं एनसीसीएफ के पोर्टल पर पंजीकृत कृषकों से दालों के बफर स्टॉक के लिए खरीद की जाऐगी।

Tur Dal Procurement Portal में कोई भी एजेंसी शामिल नहीं होगी

सूत्रों से प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार, पोर्टल पर पंजीकरण, खरीद एवं भुगतान तक की समस्त प्रक्रिया एक ही जरिए पर उपलब्ध रहेगी। किसान का पोर्टल पंजीकरण सीधा या PACS व FPO के जरिए कर सकते हैं। साथ ही, किसान को भुगतान नाफेड द्वारा सीधे उनके लिंक्ड बैंक खाते में किया जाएगा। साथ ही, इस मध्य में किसी भी एजेंसी को शामिल नहीं किया जाऐगा। यह संपूर्ण प्रक्रिया किसान केन्द्रित है, जिसमें पंजीकरण से लेकर भुगतान तक की गतिविधियों को किसान स्वयं ट्रैक कर सकते हैं।ज

कृषि क्षेत्र में तकनीक का उपयोग कर इस राज्य में बड़े पैमाने पर क्राप सर्वेक्षण

उत्तर प्रदेश राज्य में ई–खसरा एप के माध्यम से किसानों को सहायता मिलेगी। यूपी के कृषि मंत्री का कहना है, कि कृषि में तकनीक का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है। कृषि क्षेत्र में तकनीकी इस्तेमाल में बीते कुछ दिनों में बेहद बड़ा है। इसी कड़ी में फिलहाल उत्तर प्रदेश में ई–खसरा एप का आरंभ किया गया है। एप की शुरुआत पर राज्य के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही का कहना है, कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री किसानों के फायदों का ख्याल रख रहे हैं। साथ ही, किसानों के लिए विभिन्न योजनाऐं भी जारी की जा रही हैं। आगे इस लेख में हम आपको बताऐंगे कि ये ई–खसरा एप क्या है एवं यह कृषकों के लिए किस तरह लाभकारी है।

कृषि क्षेत्र में तकनीक का अधिकतम प्रयोग – सूर्य प्रताप शाही

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही का कहना है, कि कृषि क्षेत्र में तकनीक का अधिक से अधिक उपयोग हो रहा है। इसके अंतर्गत समस्त फसलों का डिजिटल सर्वेक्षण कराया जा रहा है। उनका कहना है, कि एग्रीस्टैक योजना के अंतर्गत ई–खसरा पड़ताल भारत सरकार की एक परिवर्तनकारी परियोजना है। इसका मकसद भारत के कृषि पारिस्थितिकी तंत्र का डिजिटल प्रारूप तैयार करना है।

पायलट योजना के तहत डिजिटल क्राप सर्वे

कृषि मंत्री का कहना है, कि खरीफ 2023 में राज्य के कुल गाटा संख्या 7.87 करोड़ के 20 फीसद गाटा को सम्मिलित करने के लिए पायलट योजना के तौर पर 21 जनपदों में पूरी तरह से और 54 जिलों में 10 ग्राम पचांयतों में डिजिटल क्राप सर्वे का काम शुरू किया गया। योजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा तैयार की गई मोबाइल एप के जरिए से राज्य के 21 जनपदों सुल्तानपुर, वाराणसी, जौनपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, मुरादाबाद, जालौन, चित्रकूट, फर्रुखाबाद, अयोध्या, चंदौली, झांसी, बस्ती, हरदोई, देवरिया, गोरखपुर, भदोही, संत कबीर नगर, औरैया, महोबा और हमीरपुर में खरीफ 2023 में 1,15,89,645 गाटों का सर्वेक्षण हुआ।

उत्तर प्रदेश के कितने जनपदों में सर्वेक्षण किया जाऐगा

रबी सीजन 2023–24 में राज्य के समस्त जनपदों में शत–प्रतिशत फसल सर्वेक्षण का काम ई–खसरा पड़ताल के जरिए से किया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस प्रक्रिया को मोबाइल एप के जरिए किया गया है। राज्य के 75 जनपदों में 110221 राजस्व ग्राम हैं, जिनमें 7 करोड़ 87 लाख 73 हजार 211 गाटे हैं, जिनमें से 95270 का जिओ रेफरेंस नक्शा है। इनमें 6 करोड़ 69 लाख 37 हजार 766 जिओ रेफरेंस गाटा शामिल हैं, जिनमें ई–खसरा पड़ताल की आवश्यकता है। सर्वे राज्य के समस्त 75 जनपदों में होगा और 15 फरवरी तक पूर्ण होगा। राजस्व विभाग के समस्त लेखपालों एवं कृषि विभाग के तकनीकी सहायकों, बीटीएम, एटीएम और पंचायत सहायकों को इस कार्य में सर्वेयर के तौर पर काम करना होगा।

बिहार में मखाना प्रोसेसिंग यूनिट खोलने के लिए मिलेगा 85% प्रतिशत अनुदान

मखाना प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित कर लाखों की आय करना चाहते हैं, तो आज का यह लेख आपके लिए बेहद फायदेमंद है। भारत में 85% प्रतिशत मखाने की पैदावार केवल बिहार में होती है। बिहार के मिथिलांचल मखाना को जीआई टैग (ळप् ज्ंह) भी हांसिल हुआ है। मखाने की खेती के साथ राज्य सरकार मखाना प्रोसेसिंग पर बल दे रही है। इसी कड़ी में मखाना प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करने के लिए कैपिटल सब्सिडी की पेशकश की गई है। राज्य सरकार के इस कदम से मखाना प्रोसेसिंग यूनिट लगाके शानदार धनराशि कमा सकेंगे। परंतु, प्रोसेसिंग इकाई नहीं होने के कारण ज्यादा पैदावार करने के पश्चात भी किसान को उतना ज्यादा मुनाफा नहीं होता है। ऐसी स्थिति में बिहार की नीतीश सरकार ने मखाना उत्पादक किसानों की आमदनी बढ़ाने की दिशा में ये एक बड़ा कदम उठाया है।

मखाना प्रोसेसिंग यूनिट को प्रोत्साहन दिया जाएगा

दरअसल, बिहार सरकार का मानना है, कि मखाना उत्पादक राज्य होने के बावजूद भी बिहार के कृषक समुचित मुनाफा नहीं कमा पा रहे हैं। चूंकि, फूड प्रोसेसिंग इकाई के अभाव के कारण किसान ओने–पौने भाव पर अपनी पैदावार को बेचने पर मजबूर हैं। अगर राज्य में मखाना प्रोसेसिंग यूनिट को प्रोत्साहन दिया जाए, तो किसानों की आमदनी बढ़ जाऐगी। साथ ही, किसान आत्मनिर्भर भी बनेंगे। यही कारण है, कि सरकार ने कृषकों को मखाना प्रोसेसिंग यूनिट पर अनुदान देने का निर्णय लिया है। इसके लिए बिहार कृषि प्रोत्साहन नीति के अंतर्गत सरकार ने मखाना प्रोसेसिंग यूनिट को बढ़ाने की योजना निर्मित की है।

किसान भाई अनुदान से इस तरह लाभ उठा सकते हैं

किसान भाई इस योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। योजना के अंतर्गत उन कृषकों को अनुदान दिया जाएगा, जो प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करना चाहते हैं। अनुदान का फायदा उठाने के लिए आपको उद्यान निदेशालय की वेबसाइट https://horticulture-bihar-gov-in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन करना पड़ेगा।

मखाना प्रोसेसिंग इकाई खोलने के लिए कितना अनुदान मिलेगा ?

यदि आप प्रोसेसिंग इकाई खोलने के लिए व्यक्तिगत, पार्टनरशिप, समिति अथवा किसी कंपनी के माध्यम से निवेश करना चाहते हैं, तो आपको 15 फीसद तक का अनुदान मिलेगा। वहीं, किसान उत्पादक कंपनियों के लिए 25% फीसद अनुदान रहेगा। अनुदान का लाभ उठाने के लिए कृषकों को वक्त पर आवेदन करना पड़ेगा। अगर किसान ज्यादा जानकारी हांसिल करना चाहते हैं, तो वे जिला उद्यान अधिकारी से सीधे संपर्क साध सकते हैं।

बिहार राज्य के इन जिलों में मखाने की खेती की जाती है

बतादें, कि बिहार का मखाना देश–दुनिया में मशहूर है। यही कारण है, कि मिथिला के मखाने को जीआई टैग भी हांसिल हुआ है। बिहार में मखाने की खेती सबसे ज्यादा सुपौल, मधुबनी, समस्तीपुर और दरभंगा जनपद में की जाती है। मखाने की पैदावार में बिहार की भागीदारी 80 से 90 प्रतिशत तक है। अब ऐसी स्थिति में बिहार के किसान सरकार की इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

मोदी सरकार महिला किसानों को इस योजना के तहत वार्षिक 12 हजार प्रदान करेगी

मोदी सरकार शीघ्र महिला कृषकों को काफी बड़ा तोहफा प्रदान कर सकती है। सूत्रों की मुताबिक, 1 फरवरी को प्रस्तुत होने वाले अंतरिम बजट में सरकार महिला कृषकों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की धनराशि दोगुनी करने की घोषणा कर सकती है। लोकसभा चुनाव से पूर्व मोदी सरकार महिला कृषकों को एक बड़ा तोहफा देने की तैयारी कर रही है। केंद्र सरकार महिला किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की धनराशि डबल कर सकती है। यानी कि महिला कृषकों के खाते में 6 की वजाय अब 12 हजार रुपये आऐंगे। PM kisan Yojana के अंतर्गत वर्तमान में लघु और सीमांत कृषकों को वार्षिक 6000 रुपये प्रदान किए जाते हैं, जो दो–दो हजार रुपये की तीन किस्तों में कृषकों के खातों में पहुँच जाते हैं। ये एक तरह की आर्थिक सहायता है जो सरकार द्वारा छोटे किसानों की मदद के लिए दी जाती है।

सरकार द्वारा योजना से महिलाओं का समर्थन पाने की तैयारी

संपन्न हुए देश के 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों में छत्तीसगढ़, राजस्थान और मध्य प्रदेश के चुनावी वादों पर जनता ने विश्वास जताते हुए भाजपा को अप्रत्याशित जीत दिलाई है। इसमें भाजपा को महिला कृषकों का समर्थन हांसिल करने में ष्लाडली बहनाष और "लाडली लक्ष्मी योजना" की सफलता और एमपी के चुनाव में महिलाओं का भरपूर समर्थन दिलाया। इससे सबक लेकर केंद्रीय भाजपा सरकार अब देश की महिला किसानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए उनकी सम्मान निधि को दोगुना करने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

सरकार फरवरी में आने वाले बजट में ऐलान कर सकती है

कृषि मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, बजट में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना को एक नवीन श्रेणी में लागू करने की तैयारी चल रही है। इसके तहत महिला कृषकों की सम्मान निधि को 6 हजार रुपये से बढ़ाकर 12 हजार रुपये किया जा सकता है। इसकी घोषणा आने वाले अंतरिम बजट में हो सकती है, जो 1 फरवरी को पेश किया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कृषि मंत्रालय और वित्त मंत्रालय ने इसकी सारी तैयारी पूर्ण कर ली है। इस संबंध में समस्त राज्यों से लैंड होल्डिंग वाली जमीन की मालिक महिला कृषकों का विवरण भी मंगा लिया गया है। इसके विश्लेषण से सरकारी खजाने पर पड़ने वाले अतिरिक्त बोझ समेत बाकी पहलुओं पर विचार कर लिया गया है। हालांकि, अब तक इस पर न तो मंत्रालय और न ही सरकार की तरफ से कोई आधिकारिक घोषणा की है।

क्या इससे प्रभावित होगा सरकारी बजट?

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत 1.40 अरब आबादी में कृषकों की संख्या तकरीबन 26 करोड़ है। इसमें महिला किसानों की हिस्सेदारी तकरीबन 60% फीसद है। वहीं, इनमें से भी केवल 13: फीसद महिला कृषकों के नाम पर खेती की जमीन है। मतलब कि महज 13 प्रतिशत महिला किसान ही लैंड होल्डिंग रखती हैं। अगर महिला किसानों की सम्मान निधि दोगुनी की जाए, तो केंद्र सरकार को 12 हजार करोड़ रुपये का अतिरिक्त भार वहन करना पड़ेगा। केंद्र सरकार का समकुल अनुमानित बजट तकरीबन 550 अरब डॉलर होता है। इस हिसाब से 12 हजार करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ बजट के ढांचे को ज्यादा प्रभावित नहीं करेगा।

टैफे ट्रैक्टर्स ने तमिलनाडु में 500 करोड़ रुपए का किया निवेश

टैफे ने हाल ही में तमिलनाडु में 500 करोड़ रुपये का निवेश करने के लिए राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने कहा कि निवेश का उपयोग फार्म इक्विपमेंट डिवीजन के विस्तार के अलावा श साइलेंट जेनरेटर श की असेंबली और निर्यात के लिए अपनी विनिर्माण सुविधा का विस्तार करेगी। टैफे यानी ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड ने सोमवार को तमिलनाडु में 500 करोड़ रुपये का निवेश करने के लिए राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। कंपनी का कहना है, कि निवेश का उपयोग फार्म इक्विपमेंट डिवीजन के विस्तार के अतिरिक्त 'साइलेंट जेनरेटर' की असेंबली और निर्यात के लिए अपनी विनिर्माण सुविधा को बढ़ाने के लिए किया जाएगा।

कृषि यंत्र डिवीजन का विस्तार करने का प्रस्ताव किया गया

द्रमुक सरकार द्वारा आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट 2024 के दूसरे दिन, कंपनी के अधिकारियों ने मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, उद्योग मंत्री टीआरबी राजा की उपस्थिति में सरकार के साथ दस्तावेजों का आदान–प्रदान किया है। टैफे कंपनी ने अपने एक बयान में कहा, "ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड ने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए कृषि उपकरणों की एक उन्नत श्रृंखला का उत्पादन करने के लिए अपने फार्म इक्विपमेंट डिवीजन का विस्तार करने का प्रस्ताव किया है।

साइलेंट जनरेटर्स' के लिए भी किया जाएगा निवेश

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इसके अतिरिक्त लिमिटेड ने प्रस्तुत किया है कि वह अपनी सुविधा को श्साइलेंट जनरेटर्स' के असेंबली और निर्यात के लिए निवेश करना चाहती है, जो मध्य पूर्व और अफ्रीकी बाजारों के लिए होगा। आपको बतादें, TAFE की योजना तमिलनाडु में एक अत्याधुनिक डिजाइन और विकास सुविधा स्थापित करने की भी है।

यूपी सरकार द्वारा सोलर पंप पर पहले आओ पहले पाओ के आधार पर सोलर पंप पर भारी छूट

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा सोलर पंप योजना उत्तर प्रदेश (Solar Pump Scheme UP 2024) का आरम्भ किया गया है। यह योजना मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के किसानो के हित में आरम्भ की गयी है । यह किसानो के लिए एक बहुत ही लाभकारी योजनाओं में से एक है । वर्तमान समय में पेट्रोल और डीजल के दाम इतने ज्यादा अधिक बढ़ चुके है कि किसान खेतों में पानी डीजल इंजिन से लगाकर लाभ नहीं प्राप्त कर सकता है, और खेती में सिर्फ पानी देने की वजह से बहुत अधिक खर्च आ जाता है। इस समस्या से किसान बहुत अधिक परेशान रहते है। इसके अलावा खेतों में पानी के लिए कई गांवों में अभी तक बिजली की समस्या बनी हुई है। जहाँ ट्यूबेल की लिए बिजली की समस्या अभी भी बनी हुई है।

फसल को समय से पानी देने के लिए और किसानों को इसका कोई खर्च न उठाना पड़ें इसके लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने सोलर पंप योजना की शुरुआत करके नई सौगात दी है। सोलर पम्प योजना का लाभ प्राप्त कर किसानो को सिंचाई व्यवस्था में लाभ होगा इससे किसानो को अधिक खर्च की जरूरत नहीं होगी। उत्तर प्रदेश के 10,000 गावो में इस सोलर पंप को लगाने की योजना बनायीं गयी है। जिसमे एक सोलर पंप के जरिये कई किसानो की समस्याओ का समाधान होगा। यदि आप भी उत्तर प्रदेश में रहते है, और इस योजना का लाभ प्राप्त करना चाहते है, तो इस पोस्ट में आपको मुख्यमंत्री सोलर पंप योजना 2024 उत्तर प्रदेश, ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, UP Solar Pump Scheme से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियों के बारे में बताया जा रहा है।

किसानों को ट्रेन किराए में रेलवे की तरफ से कितनी छूट दी जाती है

रेलवे विभाग की तरफ से भी कृषकों को सुविधा प्रदान की जाती है। भारतीय रेलवे में किसानों को निर्धारित छूट पर टिकट मिल सकती हैं। भारत एक ऐसा देश है, जो कि किसानों को अन्नदाता के नाम से संबोधित करता है। साथ ही, अन्नदाता के लिए केंद्र सरकार और राज्य की सरकारें विभिन्न योजनाऐं चलाती हैं। इसके माध्यम से किसान भाइयों को लाभ प्रदान किया जाता है।

किसान भाइयों को टैक्स पर उपकरणों – यंत्रों की खरीद पर अच्छी खासी छूट दी जाती है। साथ ही, टोल पर भी कृषकों के ट्रैक्टरों को छूट मिलती है। इसके अतिरिक्त भी बाकी जगहों पर किसान भाइयों को विभिन्न तरह से रियायत मिल जाती है। परंतु, आज हम आपको यह बताने जा रहे हैं, कि कृषकों के लिए रेलवे की तरफ से क्या सुविधा मुहैय्या कराई जाती है।

कृषकों को ट्रेन किराए में भारी छूट

रिपोर्ट्स के मुताबिक, किसान भाइयों को ट्रेन के किराए में काफी छूट मिलती है। भारतीय रेलवे की ओर से कृषकों और मजदूरों को सेकंड क्लास और स्लीपर क्लास टिकट पर 25 से लेकर 50 प्रतिशत तक छूट प्रदान की जाती है। इन समस्त सुविधाओं को पाने के लिए कृषक भाइयों को कुछ आवश्यक बातों का पालन करना बेहद जरूरी है।

लाभ उठाने के लिए आवश्यक दस्तावेज

- किसान को अपना आधार कार्ड या मतदाता पहचान पत्र टिकट बुक करते समय टिकट काउंटर पर दिखाना पड़ेगा।
- किसान का नाम और पता टिकट पर दर्ज होना चाहिए।
- किसान को यात्रा के दौरान अपना आधार कार्ड या मतदाता पहचान पत्र साथ लेकर चलना होगा।

किसानों को छूट कैसे मिलती है ?

- किसान भाई को किसी भी कृषि या औद्योगिक प्रदर्शनी में हिस्सा लेने के लिए जाने पर 25 प्रतिशत छूट मिलती है।
- किसानों को सरकार द्वारा प्रायोजित विशेष ट्रेनों में यात्रा करने पर 33 प्रतिशत छूट प्रदान की जाती है।
- किसान भाइयों को राष्ट्रीय स्तर के कृषि व पशुपालन संस्थान में अध्ययन करने के लिए जाने पर 50 प्रतिशत छूट मिलती है।
- किसानों को ट्रेन किराए में छूट के लिए टिकट बुक करते समय टिकट काउंटर पर "किसान"का विकल्प चुनना होगा।

योगी सरकार ने गन्ना का भाव 20 रुपए बढाया, किसानों ने इस पर अपनी यह प्रतिक्रिया दी है

लोकसभा चुनाव से पहले उत्तर प्रदेश की योगी सरकार द्वारा राज्य में गन्ने का भाव 20 रुपये प्रति कुंतल बढ़ाकर किसानों को तोहफा दिया है। हालांकि, बीकेयू नेता राकेश टिकैत इसे किसान के साथ मजाक बता रहे है। राकेश टिकैत ने मीडिया से बातचीत में किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता चौधरी राकेश टिकैत ने कहा कि ष्उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा आज घोषित किए गए गन्ने का मूल्य काफी नहीं है। मात्र 20 रुपये बढ़ने से किसान को निराशा हुई है. प्रदेश का किसान हरियाणा की तरह 400 रुपये से अधिक गन्ना मूल्य घोषित होने की आशा कर रहा था, क्योंकि खेती पर प्रतिदिन खर्च बढ़ता जा रहा है। इसके अनुपात में किसान को फसल का वाजिब दाम नहीं मिल रहा है।

26 जनवरी को होगी ट्रैक्टर परेड

उन्होंने कहा कि हम 26 जनवरी को देश भर में ब्लॉक व तहसील स्तर पर ट्रैक्टर परेड निकालेंगे। क्योंकि हमने दिल्ली में हुए किसान आंदोलन में भी ट्रैक्टर परेड निकाली थी। देश का किसान 16 फरवरी को भारत बंद के साथ–साथ खेती किसानी के सभी कार्य भी एक दिन नहीं करेगा। टिकैत ने कहा कि भारतीय किसान यूनियन लंबित चल रही है। अपनी सभी मांगों को लेकर देश की राजधानी दिल्ली में 14 मार्च को एक दिवसीय किसान महा. पंचायत का आयोजन करेगा, जिसमें देश भर के किसान शामिल होंगे।

किसानों का भविष्य सरकार नहीं, आंदोलन तय करेगा– बीकेयू

इसके पहले भारतीय किसान यूनियन (BKU) के राष्ट्रीय प्रवक्ता चौधरी राकेश टिकैत ने कहा कि किसानों का भविष्य सरकार नहीं, आंदोलन तय करेगा। केंद्र में किसी की भी सरकार बने, किसानों की आवाज सुननी होगी। उन्होंने कहा कि हमारा संगठन अराजनैतिक है। लोकसभा चुनाव में हमारी कोई सक्रिय भूमिका नहीं है। पूंजीवाद देश पर हावी हो रहा है। किसानों के बच्चों के पास रोजगार नहीं है। जमीन बेचकर गुजारा कर रहे हैं। किसानों को सबसे निचले स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएं मिलती हैं। मजबूरी में लाखों किसान भूमिहीन होकर मजदूर बन रहे हैं।

योगी सरकार ने कितनी बार बढ़ाया गन्ने का भाव

योगी आदियनाथ सरकार ने उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों को तोहफा दिया है। गन्ने का समर्थन मूय 20 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ा दिया गया है। गुरुवार को हुई कैबिनेट मीटिंग में ये फैसला लिया गया है। इस दौरान लगभग एक दर्जन प्रस्तावों पर भी चर्चा हुई। यूपी सरकार के इस फैसले पर पश्चिमी यूपी के गन्ना किसानों ने खुशी जाहिर की है। आपको बतादें, कि यह तीसरा मौका है जब 2017 के बाद योगी सरकार ने तीसरी बार गन्ने का समर्थन मुल्य बढ़ाया है।

2017 में पहली बार जब बीजेपी की सरकार बनी थी तब गन्ने के समर्थन मुल्य में 10 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की गई थी। इसके उपरांत 2022 विधानसभा चुनाव से पहले 2021 में गन्ने के मुल्य में 25 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की थी। इस तरह देखा जाए तो पिछले सात सालों में योगी सरकार ने गन्ने का समर्थन मुल्य 55 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाया है।

FMCI निदेशक राजू कपूर ने 2024 में ड्रोन का कृषि में उपयोग बढ़ने की संभावना जताई

केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा किसानों की आमदनी को दोगुना करने का निरंतर प्रयास रहता है। इसी कड़ी में 2024 में उर्वरक और कृषि रसायन छिड़काव में ड्रोन के इस्तेमाल को प्रोत्साहन मिलेगा। एफएमसी इंडिया के निदेशक राजू कपूर दृ कृषि रसायन उद्योग ने वर्ष 2023 में सामने आई चुनौतियों का सामना करते हुए सतर्क व सकारात्मक आशावाद के साथ 2024 में प्रवेश किया है। 2023 के दौरान कृषि क्षेत्र में जीवीए 1.8: प्रतिशत तक गिर गया। वहीं, कृषि रसायन उद्योग के अंदर प्रमुख चालक बरकरार रहे। इस वजह से इस क्षेत्र को खुद को रीबूट (रीस्टार्ट) करने की आवश्यकता है।

जीवीए से आप क्या समझते हैं ?

सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) किसी अर्थव्यवस्था (क्षेत्र, क्षेत्र या देश) में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के समकुल मूल्य का माप है। जीवीए से यह भी पता चलता है, कि किस विशेष क्षेत्र, उद्योग अथवा क्षेत्र में कितनी पैदावार हुई है।

इस 2024 में फसल सुरक्षा उद्योग में वृद्धि की संभावना

बतादें, कि वर्ष 2023 की द्वितीय छमाही में वैश्विक स्तर पर फसल सुरक्षा उद्योग पर डीस्टॉकिंग (भंडारण क्षमता को कम करना) का विशेष प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिला है। 2024 के चलते यदि मौसम सही रहा, तो भारतीय फसल सुरक्षा उद्योग में वर्ष की तीसरीध्चौथी तिमाही में ही उछाल आने की संभावना है। जो कि समग्र बाजार की गतिशीलता में सामान्य हालात की वापसी का संकेत है। वही, रबी 2023 के लिए बुआई का क्षेत्रफल काफी सीमा तक क्षेत्रीय फसलों के लिए बरकरार है। परंतु, बुआई में दलहन और तिलहन के क्षेत्रफल में गिरावट उद्योग के लिए नकारात्मक है। एफएमसी इंडिया के उद्योग एवं सार्वजनिक मामले के निदेशक राजू कपूर का कहना है, कि चीन से कृषि रसायनों की 'डंपिंग' में नरमी की आशा करनी चाहिए। प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर एक महत्वपूर्ण प्रगति उर्वरक एवं कृषि रसायन छिड़काव के लिए ड्रोन के उपयोग में काफी वृद्धि है। सरकार समर्थित 'ड्रोन दीदी' योजना की शुरुआत से इसे बड़ा प्रोत्साहन मिलने की संभावना है। उर्वरक और कृषि रसायन उद्योग के मध्य शानदार समन्वय से ड्रोन को एक सेवा अवधारणा के तौर में स्थिर करने में सहायता मिलेगी, इसकी वजह से फसल सुरक्षा और पोषण उपयोग दक्षता व प्रभावकारिता में सुधार आऐगा।

खरपतवारों व कीटनाशकों के लिए नियंत्रण योजना

श्री कपूर ने कहा "हमें गेहूं की फसलों में फालारिस जैसे खरपतवारों और गुलाबी बॉलवॉर्म जैसे कीटनाशकों से झूझने के लिए नए अणुओं के अन. ावरण की भी आशा करनी चाहिए। नवीन अणुओं के विनियामक अनुमोदन के लिए लगने वाले वक्त को तर्कसंगत बनाने के नियामक निकाय केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड की घोषणा से इसे बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।" बागवानी उत्पादन की लगातार बढ़ोतरी कवकनाशी की लगातार मांग के लिए सकारात्मक होगी। हालांकि, जेनेरिक उत्पादों को दबाव का सामना करना पड़ सकता है। परंतु, सहायक सरकारी योजनाओं के साथ उद्योग का दूरदर्शी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित कर सकता है कि उद्योग विकास मार्ग पर लौट आए। श्री कपूर ने कहा कि 2024 में कृषि उद्योग की संभावनाएं इसके नवाचार एवं रणनीतिक कार्यों की खूबियां हैं। यह क्षेत्र सशक्त खाद्य मांग एवं टिकाऊ कृषि प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता की वजह से एक साल के विस्तार के लिए तैयार है।

ड्रोन दीदी कविता ड्रोन की सहायता से शानदार उत्पादन हासिल कर रही है

कविता ने इफको द्वारा ड्रोन प्रशिक्षण लेकर नैनो उर्वरकों का फसलों पर छिड़काव किया, जिससे आज उन्हें शानदार आय प्राप्त हो रही है। सरकार की तरफ से डिजिटलीकरण को प्रोत्सा. हन दिया जा रहा है, जिसका प्रभाव कृषि क्षेत्र में भी काफी गति से बढ़ता दिख रहा है। कृषि के कार्यों में अब ड्रोन की सहायता ली जा रही है। इससे लोगों को बेहद सहूलियत मिल रही है। सरकार की तरफ से ड्रोन दीदी योजना भी चालू की गई है। योजना के अंतर्गत महिलाएं ड्रोन पायलट बनकर नारी सशक्तिकरण को प्रोत्साहन दे रही हैं। आज हम ऐसी ही एक ड्रोन दीदी की कहानी और ड्रोन दीदी बनने के सफर के बारे में बताऐंगे।

ड्रोन दीदी पायलट कविता कहाँ की मूल निवासी हैं

आज हम आपको कहानी बताऐंगे, कि हरियाणा के रोहतक की मूल निवासी ड्रोन दीदी पायलट कविता की। कविता ने भारतीय किसान उर्वरक सहकारी इफको के माध्यम से ड्रोन प्रशिक्षण लेकर नैनो उर्वरकों का फसलों पर छिड़काव किया है। इससे आज उन्हें काफी शानदार आय अर्जित हो रही है। साथ ही, वह दूसरी महिलाओं के लिए भी एक मिसाल बनकर सामने आई हैं। कविता पोस्ट ग्रेजुएट हैं, परंतु वह बेरोजगार थीं। उन्हें किसी जरिए से जानकारी मिली कि इफको ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग करा रहा है, जिसके पश्चात उन्होंने इफको में संपर्क किया और 15 दिन की ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग ली।

15 दिन में किया 90 एकड़ में नैनो यूरिया और नैनो डीएपी का छिड़काव

प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत कविता को ड्रोन और ई–रिक्शा निरूशुल्क मुहैय्या कराए गए, जिससे वह नैनो यूरिया और नैनो डीएपी का स्प्रे कर रही हैं। उन्होंने केवल 15 दिनों में 90 एकड़ में नैनो यूरिया और नैनो डीएपी का छिड़काव किया है। इनमें गन्ना, सरसों और गेहूं की फसल शामिल हैं। इसके माध्यम से उन्हें अच्छी–खासी आमदनी हो रही है। कविता बताती है, कि वह और उनका परिवार इसके माध्यम से मजबूत हुआ है, जिसके लिए वह इफको को धन्यवाद देती हैं।

Dec 2023 में महिंद्रा एंड महिंद्रा की घरेलू ट्रैक्टर बिक्री रिपोर्ट क्या कहती है?

महिंद्रा एंड महिंद्रा स्ज्क ने अपनी दिसंबर 2023 में हुई ट्रैक्टर्स की बिक्री के आंकड़े सार्वजनिक कर दिए हैं। कंपनी द्वारा जारी किए आंकड़ों के मुताबिक, महिंद्रा एंड महिंद्रा को दिसंबर 2023 में घरेलू बिक्री में 17% प्रतिशत और निर्यात बिक्री में 31: प्रतिशत की गिरावट का सामना करना पड़ा है। भारतीय बाजार की अग्रणी ट्रैक्टर निर्माता कपंनी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अपनी दिसंबर 2023 में हुई ट्रैक्टर्स की बिक्री के आंकड़े सार्वजनिक कर दिए हैं। कंपनी द्वारा जारी किए आंकड़ों के अनुसार, महिंद्रा एंड महिंद्रा को दिसंबर 2023 में घरेलू बिक्री में 17% और निर्यात बिक्री में 31% की गिरावट का सामना करना पड़ा है।

घरेलू बिक्री में 17% फीसद की गिरावट

M & M LTD द्वारा सार्वजनिक किए गए आंकड़ों के मुताबिक, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने दिसंबर 2023 की घरेलू बिक्री में 17% प्रतिशत की भारी गिरावट का सामना किया है। कंपनी ने दिसंबर 2023 में 18,028 ट्रैक्टरों को भारत में बेचा है। वहीं, दिसंबर 2022 में 21,640 महिंद्रा ट्रैक्टरों की घरेलू बिक्री की गई थी।

निर्यात बिक्री में 31% फीसद की गिरावट

महिंद्रा एंड महिंद्रा ने दिसंबर 2023 में ट्रैक्टरों की निर्यात बिक्री में 31% फीसद की गिरावट देखने को मिली है। कंपनी ने दिसंबर 2023 में 1,110 ट्रैक्टरों की निर्यात बिक्री की है। वहीं, विगत वर्ष इसी माह में 1,603 ट्रैक्टरों को भारत से बाहर बेचा गया था।

समकुल घरेलू एवं निर्यात बिक्री

कंपनी द्वारा जारी की गई सेल्स रिपोर्ट के मुताबिक, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने दिसंबर माह में कुल ट्रैक्टरों की बिक्री में 18 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। कंपनी ने दिसंबर 2023 महीने में समकुल 19,138 ट्रैक्टरों की बिक्री की है। लेकिन, वहीं दिसंबर 2022 में 23,243 इकाइयां बेची गई थीं।

ट्रैक्टरों की मांग में बढ़ोतरी की उम्मीद

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के फार्म इक्विपमेंट सेक्टर के अध्यक्ष, हेमंत सिक्का ने कहा है, कि दिसंबर 2023 में महिंद्रा ने घरेलू बाजार में 18,028 ट्रैक्टरों की बिक्री की है। दिसंबर माह में कृषि कार्यों की गिरावट की वजह से खुदाई गतिविधियों में कमी आना साधारण बात है। उन्होंने कहा, कि हमें ट्रैक्टरों की मांग में बढ़ोतरी होने की संभावना है। क्योंकि, उद्यानिकी पैदावार में वृद्धि एवं कृषि क्षेत्र के लिए सरकारी समर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने निर्यात बाजार में 1,110 ट्रैक्टरों की बिक्री की है।

Escorts Kubota ने जारी की 2023 दिसंबर की बिक्री रिपोर्ट कुल बिक्री में 18-6% की गिरावट

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर ने अपनी दिसंबर 2023 में हुई बिक्री के आंकड़ें जारी किए हैं। आंकड़ों के मुताबिक Escorts Kubota ने घरेलू एवं निर्यात बिक्री में दिसंबर 2022 की तुलनात्मक दिसंबर 2023 में कम ट्रैक्टरों की बिक्री की है। कंपनी ने घरेलू बिक्री में 17-0% की गिरावट, निर्यात बिक्री में 31-8% की कमी तथा कुल बिक्री में 18-6% की कमी देखने को मिली है। भारत की प्रमुख ट्रैक्टर निर्माता म्बवतजे ज्ञनइवजं ने अपनी दिसंबर 2023 में हुई बिक्री के आंकड़ें जारी किए हैं। आंकड़ों के मुताबिक, एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने घरेलू एवं निर्यात बिक्री में दिसंबर 2022 की अपेक्षा दिसंबर 2023 में कम ट्रैक्टरों की बिक्री की है। कंपनी ने घरेलू बिक्री में 17-0% की गिरावट, निर्यात बिक्री में 31-8% की गिरावट एवं कुल बिक्री में 18-6% की गिरावट का सामना किया है।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर की घरेलू बिक्री कितनी है ?

Escorts Kubota द्वारा जारी की गई सेल्स रिपोर्ट के मुताबिक, कंपनी ने ट्रैक्टर की दिसंबर 2023 की घरेलू बिक्री में 17-0 % फीसद की भारी गिरावट का सामना किया है। एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने दिसंबर 2022 में 4,979 ट्रैक्टरों को भारत में बेचा था। वहीं, दिसंबर 2023 में कुल ट्रैक्टरों की घरेलू बिक्री 4,131 यूनिट्स रही है।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर की निर्यात बिक्री कितनी है ?

कंपनी की तरफ से जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर्स ने निर्यात बिक्री में 31-8% की कमी का सामना किया गया है। कंपनी ने दिसंबर 2023 में समकुल 405 ट्रैक्टरों को भारत से बाहर बेचा है। लेकिन, दिसंबर 2022 में 594 यूनिट्स की निर्यात बिक्री की गई थी। जो कि 2023 की तुलना में ज्यादा है।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर की समकुल घरेलू निर्यात बिक्री

Escorts Kubota ट्रैक्टर्स की दिसंबर 2023 में हुई समकुल बिक्री पर एक नजर डालें, तो कंपनी ने दिसंबर माह में घरेलू. निर्यात बिक्री में 18-6% फीसद की गिरावट दर्ज की गई है। कंपनी ने दिसंबर 2023 में कुल 4,536 ट्रैक्टरों को बेचा गया है। लेकिन, दिसंबर 2022 में 5,573 एस्कॉर्ट्स कुबोटा ट्रैक्टर बेचे गए थे। जो कि 2023 की तुलना में ज्यादा है।

छोटी जोत वाले किसानों के लिए आयशर का यह मिनी ट्रैक्टर एक शानदार विकल्प है?

भारत में ट्रैक्टर अपनी अहम भूमिका निभाता है। क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की 65 % जनसँख्या कृषि पर ही आश्रित रहती है। इस वजह से भारत में ट्रैक्टर भारत के कृषि क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। आज हम बात करेंगे छोटी खेती या बागवानी करने वाले किसानों के लिए उपयुक्त ट्रैक्टर के बारे में। एक बेहतरीन प्रदर्शन अदा करने वाला ट्रैक्टर खरीदने का विचार कर रहे हैं, तो आपके लिए Eicher 188 Tractor एक शानदार विकल्प साबित हो सकता है। आयशर का यह मिनी ट्रैक्टर 18 हॉर्स पावर उत्पन्न करने वाला शक्तिशाली 825 सीसी इंजन के साथ आता है। आयशर इंडियन कमर्शियल व्हीकल्स मार्केट में एक बड़ा नाम भी है। इस पर देश के अधिकांश किसान अपना भरोसा दिख. ाना पंसद करते हैं। आयशर ट्रैक्टर कृषकों एवं व्यापारियों के मध्य ज्यादा पसंद किए जाने वाला ब्रांड है। आयशर 188 ट्रैक्टर किसानों के लिए शानदार विकल्प हो सकता है। आयशर का यह मिनी ट्रैक्टर 18 हॉर्स पावर उत्पन्न करने वाला शक्तिशाली 825 सीसी इंजन के साथ आता है।

आयशर 188 ट्रैक्टर की विशेषताऐं क्या–क्या हैं?

बतादें, कि आयशर के इस ट्रैक्टर में आपको 825 सीसी क्षमता वाला सिंगल सिलेंडर में EICHER AIR COOLED इंजन आता है, जो 18 हॉर्स पावर उत्पन्न करता है। कंपनी का यह छोटा ट्रैक्टर Dry type with pre&cleaner एयर फिल्टर के साथ आता है। इस आयशर ट्रैक्टर की अधि. कतम पीटीओ पावर 15 HP है।

आयशर 188 ट्रैक्टर के फीचर्स

आयशर के इस Eicher 188 Tractor मिनी ट्रैक्टर में आपको Mechanical टाइप स्टीयरिंग भी दिखने को मिल जाता है। साथ ही, इसमें 8 Forward + 2 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स मिलता है। आयशर के इस ट्रैक्टर में Single टाइप क्लच एवं Side shift, Partial constant mesh ट्रांसमिशन देखने को मिल जाता है। कंपनी के इस मिनी ट्रैक्टर में Oil Immersed ब्रेक्स प्रदान किए गए हैं। जो टायरों पर अपनी काफी अच्छी पकड़ बनाए रखते हैं। इस आयशर ट्रैक्टर में Dual Speed PTO टाइप पावर टेकऑफ आती है, जो 540 आरपीएम उत्पन्न करती है। आयशर 188 एक 2WD मतलब टू व्हील ड्राइव में आने वाला ट्रैक्टर है, इसमें 5 x 12 x 14 / 4-75 x 14 फ्रंट टायर और 8 x 18 रियर टायर आते हैं।

आयशर 188 ट्रैक्टर की कीमत कितनी है?

भारत में Eicher 188 Tractor का एक्स शोरूम मूल्य 3.20 लाख से 3.30 लाख रुपये निर्धारित किया गया है। इस आयशर ट्रैक्टर की ऑन रोड कीमत समस्त राज्यों में आरटीओ रजिस्ट्रेशन एवं रोड टैक्स के चलते भिन्न हो सकती है। आयशर कंपनी अपने इस Eicher 188 Tractor के साथ 1 साल की वारंटी भी प्रदान करती है।

दिल्ली में पूसा कृषि विज्ञान मेले का आयोजन 28 फरवरी से 1 मार्च 2024 तक होगा

किसान भाईयों के लिए एक अच्छा समाचार है। दिल्ली में 28 फरवरी से 1 मार्च 2024 तक पूसा कृषि विज्ञान मेला लगेगा। इस लेख में जानिए मेले में इस बार क्या खास रहेगा। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (पूसा संस्थान) में 28 फरवरी से 1 मार्च 2024 तक कृषि विज्ञान मेला का भव्य आयोजन होने जा रहा है। इस बार 'कृषि उद्यमिता से समृध्द किसान' थीम पर आधारित मेले का आयोजन किया जा रहा हैं। आईसीएआर–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) के निदेशक डॉ. अशोक कुमार सिंह ने मेले की जानकारी देते हुए कहा कि इस बार 3 दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान मेला 28 फरवरी से 1 मार्च तक चलेगा। पूसा कृषि विज्ञान मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा करेंगे। इस बार मेले का विषय 'कृषि उद्यमिता से समृध्द किसान' है। इसी कड़ी में उन्होंने आगे कहा कि मेले का मुख्य आकर्षण किसानों को पूसा बासमती की किस्मों के बीज उपलब्ध कराऐ जाएंगे। इसके साथ ही मेले में कई तरह के स्टॉल भी लगाए जाएंगे।

किसानों को किस फसल की किन–किन किस्मों के पर्याप्त बीज मिलेंगे ?

डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि पूसा संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत प्रजातियों का गुणवत्ता पूर्ण बीज कृषकों को प्रति वर्ष दिया जाता हैं।

इस वर्ष पूसा संस्थान धान की नवीन विकसित किस्में पूसा बासमती 112, पूसा बासमती 1509, पूसा बासमती 1718, पूसा बासमती 1847, पूसा बासमती 1850, पूसा बासमती 1886 और पूसा बासमती 1728, तथा पूसा बासमती 1692 जैसी इन बहुत सी किस्मों का बीज किसानों को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जायेगा। विगत वर्ष पूसा कृषि विज्ञान मेले में बीज की कम मात्रा होने की वजह से बासमती धान की किस्मों के बीज सीमित मात्रा में मुहैय्या कराऐ गए थे। इस किसानों को काफी समस्याओं और आई थी। परंतु इस बार पूसा संस्थान पुख्ता इंतजाम किए हैं। डॉ अशोक कुमार ने आश्वासन देते हुए कहा कि इस बार (कृषि विज्ञान मेला 2024) सभी किस्मों के बीज किसानों को पर्याप्त मात्रा में दिए जाएंगे।

क्या किसान भाई ऑनलाइन माध्यम से यहां बुकिंग कर सकते हैं ?

इस बार पूसा संस्थान द्वारा ऑनलाइन बुकिंग की भी व्यवस्था उपलब्ध की गई हैं। किसान संस्थान की अधिकारिक वेबसाइट www-iari-res-in पर जाकर अपनी बुकिंग कर लें। इसके जरिए से कोई भी किसान अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी किस्म की कितनी भी बीज की मात्रा को बुक कर सकते हैं। ऑनलाइन बुकिंग के दौरान आप पेमेंट भी ऑनलाइन माध्यम से कर सकतें हैं। पेमेंट करने पर आपको इसका रसीद नंबर प्रदान किया जायेगा। इसको लेकर आप मेले में जायेंगे तो आपको कहीं भी लाइन में लगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। आप सीधे काउंटर पर जाकर अपने बीज को हांसिल कर सकते हैं।

धानुका एग्रीटेक ने प्रेस विज्ञप्ति में आधुनिक तकनीक से भारतीय कृषि को मजबूत करने की बात कही है

धानुका एग्रीटेक प्रेस विज्ञप्ति रू भारतीय किसानों की समस्याओं के प्रभावी समाधान के रूप में धानुका एग्रीटेक ऐसे उत्पाद लेकर आया है, जो उत्पादन क्षमता के साथ ही लाभ के प्रतिशत को भी बढ़ा देंगे। इतना ही नहीं धानुका अत्याधुनिक अनुसंधान एवं विकास और प्रशिक्षण केंद्र के जरिए यह कंपनी किसानों तक नवीनतम समाधान बिना किसी अवरोध के सीधे पहुंचाने का काम भी कर रही है।

भारतीय कृषि मौजूदा समय में बड़े बदलावों से गुजर रही है। आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी या एग्री–टेक के कारण आई इस बदलाव की लहर के बूते अब देश अंतर्राष्ट्रीय मंच पर कृषि महाशक्ति के रूप में उभरकर आने को तैयार है। पिछले कुछ वर्षों में ही, एग्री–टेक ने लाभ प्रतिशत और उत्पादन क्षमता को बढ़ा दिया है, जिसने एक बार फिर से देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका को मजबूती दे दी है।इस बढ़ोतरी को देखते हुए कहा जा सकता है कि साल 2030 तक भारत की जीडीपी में कृषि का लाभांश योगदान 600 अरब डॉलर तक पहुंचने की क्षमता है, जो 2020 की तुलना में 50 प्रतिशत से भी ज्यादा की वृद्धि होगी। इसके अलावा, एग्री–टेक ग्रामीण इलाकों के उत्थान में भी योगदान दे रहा है, जो भारत को वैश्विक स्तर पर खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में एक प्रमुख उत्पादक के रूप में स्थापित कर रहा है।

कृषि क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को मजबूत बनाने के इस मिशन को धानुका एग्रीटेक आगे बढ़ा रहा है। एक लीडर की भूमिका निभाते हुए कंपनी भारतीय किसानों को नवीन कृषि–तकनीक और आधु. निक पद्धतियां उपलब्ध करवा रहा है, जिससे वे और भी अधिक सक्षम बन रहे हैं। इतना ही नहीं बल्कि अत्याधु. निक प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ कृषि समाधानों का उपयोग करते हुए कंपनी ने एग्री–टेक के क्षेत्र में इनोवेशन को भी बढ़ावा दिया है।

कृषि से जुड़ी नवीनतम जानकारी हासिल करने के लिए धानुका ने अमेरिका, जापान और यूरोप जैसे देशों की टॉप एग्री–इनपुट कंपनियों से हाथ मिलाया है। इसका इस्तेमाल कर कंपनी ने भारतीय कृषि में ऐसी अत्याधुनिक तकनीक को पेश किया है, जो देश को वैश्विक स्तर पर कृषि क्षेत्र में अग्रणी बनने की ओर ले जा रही है। वर्तमान में, धानुका के पास तीन ऐसे अत्याधुनिक विनिर्माण इकाइयां (मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी) हैं जिनके जरिए उच्चतम स्तर के कृषि उत्पादों का उत्पादन किया जा रहा है। धानुका इन नवीनतम पद्धतियों का इस्तेमाल एग्रोकेमिकल इंडस्ट्री से जुड़े अपने उत्पादों की बड़ी रेंज को तैयार करने में कर रहा है। इन उत्पादों में खरपतवार नाशक, कीटनाशक, फफूंदनाशक, बायोलॉजिकल्स, और प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर्स शामिल हैं, जो सभी मुख्य फसल कीटों, बीमारियों और खरपतवारों से जुड़ी समस्याओं का प्रभावी तरीके से समाधान करते हैं।

किसानों को फसल से जुड़ी इन परेशानियों का सामना करने में सक्षम बनाने और फसल को सुरक्षित रखने के लिए धानुका नए उत्पाद लेकर आया है। धानुका के उत्पादों की BiologiQ रेंज की बात करें तो इसमें बायो–फर्टिलाइजर, बायो–इंसेक्टिसाइड्स, और बायो–फंगीसाइड्स दिए गए हैं।

इन सभी में मौजूद जैविक एजेंट फसलों पर लगने वाले कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करते हैं ताकि पौधों के विकास को बढ़ावा मिल सके। धानुका का नया उत्पाद Tizom जो पिछले साल लॉन्च किया गया है, गन्ने के लिए विशेषतौर पर बनाया गया खरपतवार नाशक है। यह गन्ने के खेतों से जुड़ी खरपतवारों की समस्या को प्रबंधित करने में सहायता प्रदान करता है। विकास की ओर बढ़ती भारतीय कृषि की समस्याओं के लिए BiologiQ और Tizom की रेंज में आने वाले उत्पाद ऐसे असरदार समाधान उपलब्ध करवाते हैं, जो किसानों को उत्पादन क्षमता और मुनाफा बढ़ाने में मददगार साबित हो सकते हैं। लिए कुछ प्रभावी और आधुनिक समाधान लेकर आई है।

BiologiQ रेंज में फसल सुरक्षा, मिट्टी के स्वास्थ्य, पौधों के पोषण जैसी कई जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उत्पाद बनाए गए हैं। इनमें बायो–पेस्टिसाइड्स, फंगीसाइड्स और क्रॉप न्यूट्रिटिव शामिल हैं।
Biological Insecticides लक्षित कीटों को अपना होस्ट बनाकर उन्हें अंदर से खत्म करता है। इसकी यह खूबी इसे एक ताकतवर कीटनाशक बनाती है। वहीं,
Fungicides पौधों के पैथजेनिक फंगस और बैक्टीरिया की गतिविधि को नियंत्रित करता है। इससे पौधों को स्वस्थ और सुरक्षित बनाए रखने में मदद मिलती है। इस रेंज में Nemataxe, Whiteaxe, Sporenil, Downil, Myconxt, और Omninxt जैसे प्रोडक्ट्स दिए गए हैं, जो फसल से जुड़ी विशेष समस्याओं का प्रभावी तरीके से दीर्घकालीन समाधान करते हैं। BiologiQ रेंज के उत्पाद प्राकृतिक चीजों से तैयार किए जाते हैं। इसमें आर्टिफिशियल केमिकल्स नहीं होते हैं। इसकी जगह इन उत्पादों को शुद्ध माइक्रोबियल स्ट्रेन से निर्मित किया जाता है। यह उत्पाद न सिर्फ बेहतरीन फसल पैदावार में बल्कि मिट्टी के स्वास्थ्य का कायाकल्प कर उसे और उपजाऊ बनाने में भी योगदान देते हैं।

इससे एक ओर खेती के जरिए ज्यादा आर्थिक लाभ की संभावना बढ़ती है, तो दूसरी ओर यह पर्यावरण को नुकसान भी नहीं पहुंचता। इस रेंज के उत्पाद FCO और CIBRC सहित कड़े सरकारी नियामक मानकों पर खरे उतरते हैं। साथ ही इन्हें IMO, INDOCERT, ECOCERT, OMRI जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्रमाणपत्र प्राप्त हैं। यह इन उत्पादों की विश्वसनीयता को दिखाने के साथ ही इस बात को प्रमाणित करता है कि इन्हें बनाने की प्रक्रिया में वैश्विक मानदंड का पूरी तरह से पालन किया गया है। यह प्रोडक्ट रेंज कृषि समाधान उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध धानुका एग्रीटेक की उस सोच को दर्शाती है, जिसमें यह सुनिश्चित किया जाता है कि कंपनी का हर उत्पाद उच्चतम सुरक्षा मानकों पर खरा जरूर उतरे।

भारतीय गन्ना किसानों की फसलों को खरपतवारों से बचाएगा ज्प्रवउ उत्पाद

भारतीय कृषि अनेक विविधताओं से भरी है, जिसमें अलग–अलग तरह की कृषि सम्बंधित समस्याओं के समाधान की जरूरत निरंतर बनी रहती है। ऐसे में धानुका एग्रीटेक द्वारा प्रस्तुत किया गया Tizom एक क्रांतिकारी खरपतवारनाशक के रूप में सामने आता है। यह दो रसायनों का अद्भुत मिश्रण है, जो आसानी से विविध प्रकार के खतपतवारों को नियंत्रित करने में सक्षम है। खासतौर पर यह जटिल खरपतवारों को नियंत्रित करने का एक प्रभावी समाधान है जिसमें की चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार (BLWs), संकरी पत्ती वाले खरपतवार (NLWs) और मोथा प्रजाति के खरपतवार सम्मिलित है। विशेषतौर पर ज्प्रवउ को गन्ने के खेत में आने वाले खतपतवारों के लिए तैयार किया गया है जोकिं भारतीय गन्ना किसानों के लिए एक वरदान साबित हो रहा है। Tizom की विशेषता यह है, कि यह गन्ना किसानों को उनके खेत में आने वाले खतपतवारों को नियंत्रित करने में सक्षम बनाता है। जापानी तकनीक से तैयार किया गया यह खरप. तवारनाशक अपने चयनात्मक गुण के कारण गन्ने की फसल को कोई दुष्प्रभाव नहीं पहुँचने देता है।

इसके साथ ही ज्प्रवउ लंबे समय तक खतपतवारों को नियंत्रित करने में भी समर्थ है, जिससे भारतीय गन्ना किसानों को उनके गन्ने की फसल की उपज बढ़ाने में सहायता मिल रही है, जिससे वो गोर्वान्वित हो रहे हैं।
हर तरह की परिस्थिति में अलग–अलग तरह के संसाधनों का उपयोग कर खेती करने वाले किसानों के लिए ज्प्रवउ खरपतवारनाशक जटिल खरपतवारों के नियंत्रण को आसान और प्रभावी बना रहा है । इसके साथ ही यह फसल को सुरक्षित रखते हुए गन्ने की पैदावार बढ़ाने में सहायक साबित हो रहा है।

धानुका के कृषि नवीनीकरण में लीडर बनने की महत्वाकांक्षा को दर्शाता, हरियाणा के पलवल में स्थित धानुका कृषि अनुसंधान और प्रौद्योगिकी केंद्र धानुका एग्रीटेक लिमिटेड शुरुआत से ही इस चीज को अच्छे से समझता आया है कि सर्वश्रेष्ठ उत्पाद और सेवाएं प्रदान करने में अनुसंधान और विकास की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। यही वजह है कि उन्होंने एक बड़ा आरएंडडी सेटअप स्थापित किया। वर्तमान में, धानुका सबसे बड़े अनुसंधान एवं विकास दल में से एक है, जिससे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (SAU) और देश के विभिन्न प्रतिष्ठित अनुसंधान संगठनों में काम कर चुके अनुभवी वैज्ञानिकों और तकनीकि विषेशज्ञ जुड़े हैं। धानुका एग्रीटेक ने हाल ही में हरियाणा के पलवल में एक अत्याधुनिक अनुसंधान एवं विकास और प्रशिक्षण केंद्र, धानुका कृषि अनुसंधान और प्रौद्योगिकी केंद्र (DART) की स्थापना की है। इस केंद्र की स्थापना अनुसंधान के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को और मजबूती से दर्शाती है। DART का ध्यान ऐसे कृषि समाधानों को विकसित करने पर है जो भारतीय किसानों की बढ़ती जरूरतों को पूरा कर सके। इसके लिए यह केंद्र जैविक संश्लेषण, विश्लेषणात्मक, सूत्रीकरण, मिट्टी और जल विश्लेषण, कृषि अनुसंधान एवं विकास, वनस्पति विज्ञान, जैव–कीटनाशक, जैव परख और कीट–पालन सहित कई प्रकार की प्रयोगशालाओं की एक विस्तृत श्रृंखला से सुसज्जित किया गया है। इन विशेषताओं के साथ यह एक ऐसे केंद्र के रूप में सामने आता है, जो बुनियादी, व्यावहारिक और अनुकूल अनुसंधान के जरिए खेती से जुड़ी वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास करता है, ताकि भारतीय कृषि का सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।

इस केंद्र में व्यापक अनुसंधान के लिए प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, कृषिविद और उद्योग विशेषज्ञ मिलकर काम करते हैं, ताकी किसानों को व्यावहारिक और नवीनतम समाधान उपलब्ध कराए जा सकें। इतना ही नहीं यह केंद्र किसानों को मिट्टी परीक्षण, जल विश्लेषण और जैव–कीटनाशक परीक्षण जैसी सेवाएं भी प्रदान करता है। DART के माध्यम से, धानुका एग्रीटेक किसानों को आधुनिक कृषि की चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने के लिए जरूरी ज्ञान और उपकरण उपलब्ध करवाता है। व्यावहारिक उपयोग के साथ उन्नत अनुसंधान का मिश्रण यह भी सुनिश्चित करता है कि जो भी नए और आधुनिक समाधान हैं, वे सीधे खेतों में काम कर रहे किसानों तक पहुंच सकें। इतना ही नहीं DART किसानों को विशेषज्ञों द्वारा फसल संबंधित विविध प्रकार के प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

DAHEJ प्लांट: कृषि उत्पादन क्षमता बढ़ाना

पिछले साल धानुका एग्रीटेक ने उत्पादन क्षमताएं बढ़ाने पर भी काफी ध्यान केंद्रित किया है। अगस्त 2023 में, इसने गुजरात के दहेज में एक नया विनिर्माण केंद्र स्थापित किया। धानुका का लक्ष्य इस इकाई के माध्यम से कच्चे माल की सुरक्षा सुनिश्चित करना और विनिर्माण प्रक्रिया में पिछड़ चुके एकीकरण को आगे बढ़ाना है।

यह ईकाई धानुका के कृषि क्षेत्र में अपनी

आत्मनिर्भरता और स्थिरता को बरकरार रखने के संकल्प को प्रदर्शित करता है। वैसे गुजरात में स्थित इकाई कच्चे माल की कम लागत सुनिश्चित करने और उत्पादन बढ़ाने में भी काफी मददगार साबित होगी। यह रणनीतिक कदम धानुका के उस दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसमें दूसरों पर निर्भरता कम करने और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद देश भर के किसानों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

ऐसे समय में जब देश का कृषि क्षेत्र एक अहम मोड़ पर खड़ा है, धानुका एग्रीटेक किसानों को परिवर्तनकारी उत्पाद और अग्रणी समाधान उपलब्ध करवाने पर लगातार काम कर रहा है। यह कृषि विकास और उत्पादकता को बढ़ाने के नए आयाम खोलने में अहम भूमिका निभाएगा। चाहे फसल को सुरक्षित रखने वाली BiologiQ रेंज हो या फिर खरपतवार का सफल प्रबंधन करने वाला Tizom, धानुका सीधे तौर पर भारतीय कृषि की उभरती जरूरतों को संबोधित कर रहा है। इस पहल का हिस्सा बनते हुए धानुका कृषि अनुसंधान और प्रौद्योगिकी केंद्र एक ओर व्यावहारिक उपयोग के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान को एकजुट कर रहा है, तो दूसरी ओर उत्पादन क्षमता का विस्तार कर आत्मनिर्भरता बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

धानुका एग्रीटेक साल 2024 में नए उत्पाद बाजार में उतारने को तैयार है, जिसे लेकर अभी से ही उत्सुकता देखने को मिल रही है। इन नवीनतम उत्पादों की बदौलत भारत की मौजूदा कृषि पद्धियों के मानक ऊपर उठते दिखेंगे, तो वहीं खेती के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आते भी देखे जा सकेंगे। यह आगामी उत्पाद श्रृंखला भारतीय कृषि की बढ़ती जरूरतों के अनुसार अत्याधुनिक तकनीकों और लंबे समय तक चलने वाले समाधानों को पेश करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

इन सब उत्पादों और अन्य चीजों के दम पर धानुका एग्रीटेक एक बार फिर से एग्री–टेक के क्षेत्र में खुद को लीडर के तौर पर साबित कर रहा है। यह भारतीय कृषि क्षेत्र में एक सकारात्मक बदलावों को संचारित करता देखा जा सकता है। नवाचार, स्थिरता और आत्मनिर्भरता की दिशा में कंपनी के निरंतर प्रयास भारत में कृषि के भविष्य को बेहतर आकार देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

जानें आईएआरआई–पूसा किस तरह किसानों को MSP से दोगुनी कीमत दिला रहा है ?

किसान भाइयों आज हम आपके लिए एक अच्छी खबर लेकर आए हैं। अब आप यह सोच रहे होंगे कि, आपके लिए अच्छी खबर क्या है। तो अगर आपसे कोई कहे कि आपकी फसल का एमएसपी से डेढ़ गुना ज्यादा भाव मिल सकता है, तो यह किसानों के लिए काफी खुशी का समाचार होगा। जी हाँ, बेशक आपको यह सुनकर बड़ा ही अजीब लग रहा होगा। अब आप यह सोच रहे होंगे कि जब सरकार ने एमएसपी तय कर रखी है तो उससे ज्यादा भाव कैसे मिल सकता है। यदि यह कहा जाए कि इसमें इसमें स्वयं इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईएआरआई–पूसा) कृषकों की सहायता कर रहा है, तो आपको और भी ज्यादा अचम्भा होगा। परन्तु यह बात एकदम सत्य है। हजारों की संख्या में किसान पूसा की सहायता से एमएसपी से फसल का डेढ़ गुना या इससे भी ज्यादा भाव प्राप्त कर रहे हैं।

आईएआरआई कैसे कर रहा है किसानों की मदद

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रधान वैज्ञानिक और बीज उत्पादन इकाई के प्रभारी डा. ज्ञानेंद्र सिंह का कहना है, कि आईएआरआई किसानों की पैदावार और आय बढ़ाने में मदद कर रहा है। यह प्रयास इसी कड़ी में ही किया गया है। उन्होंने बताया कि आईएआरआई के पास इतनी जमीन नहीं है, कि वो तमाम किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज मुहैया करा पैदावार बढ़वा सके। इसके लिए वो किसानों के खेतों में बीज तैयार करा रहा है। आईएआरआई का यह प्रयास किसानों की आय और पैदावार दोनों को बढ़ाने में मददगार हो रहा है। शोधों से स्पष्ट हो गया है, कि उन्नत किस्म के बीजों से 30 से 40 प्रतिशत तक उपज बढ़ाई जा सकती है।

कि वो तमाम किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज मुहैया करा पैदावार बढ़वा सके। इसके लिए वो किसानों के खेतों में बीज तैयार करा रहा है। आईएआरआई का यह प्रयास किसानों की आय और पैदावार दोनों को बढ़ाने में मददगार हो रहा है। शोधों स स्पष्ट हो गया है, कि उन्नत किस्म के बीजों से 30 से 40 प्रतिशत तक उपज बढ़ाई जा सकती है।

किसानों को MSP से दोगुनी कीमत पाने के लिए इस प्रकिया से गुजरना पड़ेगा

डा. ज्ञानेंद्र सिंह का कहना है, कि "सबसे पहले वैज्ञानिक यह देखते हैं कि किस फसल की कौन सी प्रजाति अच्छी है और उसके बीज के लिए कौन–कौन से इलाके सबसे अच्छे रहेंगे। जहां पर सबसे उच्च गुणवत्ता का बीज पैदा करा सकते हैं। वैज्ञानिक इस पर रिसर्च करते हैं। इसके बाद वहां के किसानों से संपर्क करते हैं। इसमें किसानों के चयन के बहुत सारे आधार होते हैं। बीज तैयार करने में लागत किसान के द्वारा ही लगाई जाती है। लेकिन गाइड यानी दिशा निर्देशन आईएआरआई के वैज्ञानिक करते हैं। इस प्रक्रिया में आईएआरआई केन्द्र के 100–120 किमी. के दायरे में रहने वाले किसानों का चयन किया जाता है, जिससे उन्हें बीज तैयार होने के बाद केन्द्र में पहुंचाने में ज्यादा खर्च ना करना पड़े। कई किसान मिलकर भी बीज उत्पादन में शामिल हो सकते हैं, जिससे उनका बीज पहुंचाने में भाड़ा कम लगेगा।"

किसानों द्वारा तैयार की गई फसल का इस तरह भुगतान होगा

किसान अपनी फसल को तैयार होने के बाद आईएआरआई केन्द्र पर ले जाता है। किसान को उसी समय एमएसपी के मुताबिक भुगतान किया जाता है। इसके पश्चात वैज्ञानिक उसकी जांच–पड़ताल करते हैं, जिसमें औसतन 8 फीसदी माल गुणवत्ता के अनुरूप नहीं निकलता है। इसके लिए किसान और खरीदार को केन्द्र में बुलाया जाता है, जो इस माल को बेचता है। चूंकि, आईएआरआई इसे बीज के रूप में तैयार कराता है। इस वजह से फसल और बीज कीमत में एमएसपी के अनुसार करीब डेढ़ गुना या इससे भी ज्यादा का अंतर होता है। आईएआरआई किसान को अंतर में आए रुपये का भुगतान करता है। इस तरह से किसान को डेढ़ गुना से अधिक लागत मिल जाती है।

कृषकों को मिलेगी घर बैठे जानकारी

किसान भाई पूसा दिल्ली के बीज उत्पादन से सीधा 011 25842686 पर डायल करके संपर्क कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त देशभर के किसान विज्ञान केन्द्र (केवीके) और एग्रीकल्चर टेक्निकल इनफार्मेशन केन्द्र (एटीके) से संपर्क कर इसकी जानकारी हांसिल कर सकते हैं।

दिल्ली, उत्तर प्रदेश समेत इन राज्यों के किसान यहां संपर्क कर सकते हैं

दिल्ली के समीपवर्ती शहरों में रहने वाले भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) दिल्लीमें बीज इकाई में जाकर सीधा संपर्क कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में वाराणसी, मेरठ, मोदीपुरम, मऊ, इज्जतनगर, लखनऊ, झांसी और कानपुर, मध्य प्रदेश में भोपाल, हरियाणा में करनाल और हिसार, राजस्थान में जोधपुर और बीकानेर, बिहार में पटना, छत्तीसगढ़ में रायपुर, झारखंड में रांची, उत्तराखंड में देहरादून और अल्मोड़ा के ष्आईसीएआर में जाकर इसकी जानकारी हांसिल कर सकते हैं।

भारत के अन्य राज्यों के लोग कैसे करें संपर्क

पूरे भारत के किसान फार्मर व्हाट्सएप हेल्पलाइन 9560297502, पूसा हेल्पलाइन 011–25841670 ६ 25841039, 25842686 और पूसा एग्रीकॉम 1800–11–8989 टोल फ्री नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। ऑनलाइन सवाल https://www-iari-res-in/bms/faq/index.php पर भेज सकते हैं।

विश्व में नंबर वन श्रेणी की चावल की किस्में, भारत की किस्म का नाम भी शामिल

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि बासमती चावल को विश्व का नंबर वन चावल माना जाता है। वहीं, इसके पश्चात इटली, पुर्तगाल, यूएस सहित जापान में उगाए जाने वाले चावल आते हैं। लोग चावल का उपभोग दाल, कढ़ी तो कभी बिरयानी के रूप में करते हैं। चावल का उपभोग तकरीबन भारत के हर घर में होता है। साथ ही, इसका इस्तेमाल विश्व भर के घरों में किया जाता है। खबरों के मुताबिक, बासमती चावल को दुनिया में सबसे अच्छा चावल माना जाता है। भारत और पाकिस्तान में यह लंबे दाने वाला चावल उगाया जाता है। बासमती चावल का स्वाद सबसे हटकर है। पकाने पर यह एक–दूसरे के साथ चिपकता नहीं है और अलग रहता है। बासमती चावल को पुलाव, बिरयानी और सलाद में इस्तेमाल किया जाता है।

इटली में उगाए जाने वाला अर्बोरिया चावल

अब इसके उपरांत इटली में उत्पादित किए जाने वाला अर्बोरिया चावल आता है। इटली में उत्पादित किए जाने वाला मध्यम लंबे दाने वाला चावल है। साथ ही, इसकी नरम, चिपचिपी बनावट से अर्बोरिया चावल जाना जाता है। अर्बोरिया चावल पकाने पर मोटा और मलाईदार चावल बनता है। रिसोट्टो को बनाने के लिए सामान्य तोर पर अर्बोरिया चावल का इस्तेमाल किया जाता है। पुर्तगाल में लंबे दाने वाला चावल कैरोलिनो कहा जाता है। कैरोलिनो चावल अपनी नरम एवं मलाईदार बनावट से जाना जाता है। यह पकाने पर मोटा और मलाईदार चावल बनता है। पुर्तगाली खाने, जैसे पोर्क बिफन और फ्राईड राइस, अक्सर कैरोलिनो चावल का इस्तेमाल करते हैं।

जापान का चावल भी इसमें शामिल होता है

अरिजोना रॉयल चावल एक लंबे दाने वाला चावल है जो कि यूएस में उगाया जाता है। एरिजोना रॉयल चावल अपने नरम, मलाईदार बनावट के लिए मशहूर है। इसको पकाने पर मोटा और मलाईदार चावल बनता है। जापान में उगाए जाने वाला गोल, छोटे दाने वाला चावल जापानी सुशी चावल होता है। इसकी नरम और चिपचिपे बनावट से जापानी सुशी चावल जाना जाता है। ये पकाने पर मोटा और मलाईदार बनता है। जापानी सुशी चावल सुशी बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

इस राज्य में बढ़ेगी गन्ने की कीमत, गन्ना किसानों को मिलेगा लाभ

योगी सरकार की तरफ से उत्तर प्रदेश के कृषकों को शीघ्र ही सरकार की तरफ से तोहफा दिया जा सकता है। राज्य सरकार की तरफ से आने वाले दिनों में गन्ने के भाव को बढ़ाया जा सकता है। कृषकों के हित को मन्देनजर रखते हुए शीघ्र ही यूपी सरकार गन्ने की कीमतों को लेकर ऐलान कर सकती है। इस फैसले के लागू होने के पश्चात किसान भाइयों को गन्ने का मूल्य काफी अधिक मिलेगा।

सूत्रों के मुताबिक, सरकार की तरफ से गन्ने की कीमतों में आगामी कुछ ही दिनों में 15 रुपये से लेकर 25 रुपये तक का इजाफा किया जा सकता है। साथ ही, राज्य के गन्ना मंत्री ने भी बातों–बातों में इस तरह के संकेत दिए हैं। हालांकि, कितने रुपये की बढ़ोतरी की जाऐगी। इस बात की फिलहाल कोई पुष्टि नहीं हुई है।

गन्ना किसान लगातार मूल्य वृद्धि की मांग कर रहे हैं

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि कृषकों की तरफ से गन्ने की SAP को बढ़ाए जाने की निरंतर मांग की जा रही है। हालांकि, राज्य में बीते वर्षों में इसकी कीमत में इजाफा हुआ था। उत्तर प्रदेश में अंतिम बार वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले गन्ना मूल्य बढ़ाकर 350 और 360 रुपये प्रति कुंतल घोषित किया गया था। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई राज्य परामर्शित गन्ना मूल्य निर्धारण संस्तुति समिति की बैठक में गन्ना कृषकों ने उत्पादन लागत बढ़ने की वजह से मूल्य वृद्धि की मांग की है।

गन्ना का मूल्य जल्द से जल्द घोषित किया जाऐगा

वहीं, चीनी मिल एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने बहुत सारी समस्याओं को उठाते हुए कीमतों को यथावत रखने की मांग की है। मुख्य सचिव ने सब कुछ सुनने के पश्चात कहा कि गन्ना मूल्य यथाशीघ्र घोषित किया जाऐगा। संबंधित प्रस्ताव को शीघ्र ही कैबिनेट के सामने मंजूरी के लिए रखा जाऐगा। सरकार से रालोद और सपा निरंतर गन्ना मूल्य बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। बहुत सारी खबरों के मुताबिक, सरकार चीनी मिलों को भी राहत प्रदान कर सकती है। सरकार गन्ना मूल्य में बढ़ोतरी की वजह से पड़ने वाले खर्च को कम करने के लिए मिलों को परिवहन भाड़े में एक से दो रुपये की सहूलियत प्रदान कर सकती है।

इस राज्य में पान की खेती के लिए 50% प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है

पान का स्वाद बहुत लोगों को पसंद होता है। पान के लोकप्रिय होने की वजह से बिहार सरकार ने मगही पान की खेती के लिए अनुदान देने की घोषणा की है। मगही पान की खेती की अगर हम कुल लागत की बात करें तो वह 70,500 रु होती है। इसके लिए 50% प्रतिशत मतलब कि 32,250 रुपये का अनुदान सरकार की तरफ से मिलेगा।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भारत में कृषकों को लेकर सरकार भिन्न भिन्न तरह की योजनाएं चलाती है। इससे कृषकों भाइयों को काफी लाभ दिया जा सके। कृषकों के लिए सरकार विभिन्न प्रकार की फसलों पर सब्सिडी की सुविधा मुहैय्या कराती है। बिहार राज्य में खेती करने वाले कृषकों के लिए बिहार सरकार ने एक काफी बड़ी सौगात दी है। बिहार में पान को लेकर काफी ज्यादा रूचि देखी जाती है। इसके चलते बिहार सरकार ने पान की खेती के लिए अनुदान देने की घोषणा कर दी है। पान की खेती के लिए सरकार द्वारा इस प्रकार सब्सिड़ी मिलेगी।

पान की खेती पर मिलेगा 32,250 रुपये तक अनुदान

पान को एक प्राकृतिक माउथ फ्रेशनर कहा जाता है। सामान्य तौर पर संपूर्ण भारत में काफी पान के शौकीन हैं। लेकिन बिहार राज्य की बात कुछ हटकर है। बिहार राज्य का मगही पान कुछ ज्यादा ही मशहूर है। इसको जियोग्राफिकल आइडेंटिफिकेशन का टैग भी हांसिल हो चुका है। बाजार में इसकी काफी ज्यादा मांग होती है।

इन्ही सब बातों को मन्देनजर रखते हुए बिहार सरकार ने मगही पान की खेती के लिए अनुदान देने की घोषणा कर दी है। मगही पान की खेती की कुल लागत 70,500 रु के आसपास होती है। अब इसके लिए 50 प्रतिशत का अनुदान सरकार की तरफ से मिलेगा। मतलब कि कोई अगर मगही पान की खेती करता है तो उसको 32,250 रुपये तक की सब्सिडी बिहार सरकार की तरफ से प्रदान की जाऐगी।

किसान भाई इस योजना का कैसे लाभ उठा सकते हैं ?

किसानों को विशेष फसल योजना के अंतर्गत बिहार सरकार के कृषिमंत्रालय के विभाग ने मगही पान के लिए अनुदान देने की घोषणा कर दी है। बिहार सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित इस योजना के अंतर्गत अनुदान का लाभ लेने के लिए आधिकारिक वेबसाइट https://horticulture-bihar-gov-in पर जाऐं। बतादें कि इसके पश्चात पान विकास योजना पर क्लिक करें। अब इसके बाद आवेदन करें लिंक पर क्लिक करें। इसके उपरांत समस्त आवश्यक डीटेल्स भरने के पश्चात आवेदन सबमिट कर सकते हैं।

पीएम किसान सम्मान निधि योजना की नवीन पंजीकरण जानकारी

केंद्र की तरफ से किसानों को आर्थिक लाभ पहुँचाने और आय को दोगुना करने के उद्देश्य से कई सारी योजनाऐं चलाई जा रही हैं। पीएम किसान सम्मान निधि का किसान भाई सुगमता से लाभ हांसिल कर सकते हैं। योजना से संबंधित जानकारी पाने के लिए किसान भाई आधिकारिक साइट और हेल्पलाइन नंबर की सहायता ले सकते हैं।

सरकार की तरफ से कृषकों की सहायता के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जाती हैं। जिन योजनाओं के माध्यम से किसान भाइयों को आर्थिक मदद के साथ–साथ, कृषि यंत्रों से संबंधित सहयोग आदि जानकारियां मिलती हैं। किसानों को खेती के समय आर्थिक तौर पर कोई दिक्कत परेशानी ना आए इसके लिए सरकार पीएम किसान सम्मान निधि योजना चला रही है। इस योजना के अंतर्गत समस्त छोटे और सीमांत कृषकों को प्रति वर्ष 6,000 रुपये की तीन समान किस्तों में वित्तीय मदद प्रदान की जाती है।

ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों के जरिए आवेदन किया जा सकता है

पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लिए ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन माध्यम से आवेदन किया जा सकता है। ऑनलाइन आवेदन करने के लिए किसान भाई को पीएम किसान योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना पड़ेगा। ऑफलाइन आवेदन करने के लिए किसान को अपने क्षेत्र के कृषि कार्यालय में जाना पड़ेगा।

किसान ऑनलाइन माध्यम से कैसे अप्लाई करें

पीएम किसान योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर जाने के पश्चात आपको "न्यू रजिस्ट्रेशन" टैब पर क्लिक करना है। अब किसान को अपना विवरण जैसे– नाम, पता, आधार संख्या, बैंक खाता संख्या और मोबाइल नंबर दर्ज करनी होगा। इसके पश्चात किसान को एक पासवर्ड बनाना होगा और फिर ष्सबमिटष् बटन पर क्लिक करना होगा।

किसान भाई ऑफलाइन आवेदन किस प्रकार करें

ऑफलाइन आवेदन करने के लिए किसान अपने क्षेत्र के कृषि कार्यालय में जा सकते हैं। आपको आवेदन पत्र भरना होगा और जरूरी दस्तावेज जमा करने होंगे। इनमें पैन कार्ड, बैंक खाता पासबुक, किसान का फोटो और आधार कार्ड शामिल हैं।

किसानों के लिए योगी सरकार की एग्री स्टैक योजना क्या है ?

एग्री स्टैक योजना (Agri Stack Scheme) के अंतर्गत जनपद में 93 हजार खसरों में खड़ी फसलों का डिजिटल सर्वेक्षण किया जाना है, जो कि 13 हजार खसरों का हो चुका है। इससे आपदा से क्षतिग्रस्त फसल का बीमा कंपनी अथवा सरकार द्वारा मुआवजा सुगमता से मिल सकेगा। डिजिटल सर्वेक्षण के जरिए ज्ञात हो सकेगा कि किसान ने अपने खेत में कौन–सी फसल की बिजाई की है।

इस सर्वे से यह पता चलता है, कि किसान ने अपने खेत में कौन सी फसल उगाई है। खेतों में उगाई जाने वाली फसलों के वास्तविक समय सर्वेक्षण के लिए एग्री स्टैक परियोजना के अंतर्गत डिजिटल क्राप सर्वे से रिकॉर्ड कृषि विभाग और शासन के पास ऑनलाइन सुरक्षित रहेगा।

सरकार योजना के अंतर्गत सर्वेक्षण करा रही है

आपदा से क्षतिग्रस्त फसल का बीमा कंपनी या सरकार द्वारा मुआवजा सहजता से मिल पाऐगा। सरकार बिजाई से लगाकर उत्पादन तक का सटीक आंकलन करने के लिए यह एग्री स्टैक योजना के अंतर्गत सर्वे करा रही है। इससे पहले किस जनपद में कितने क्षेत्रफल में कौनसी फसल बोई गई है। कृषि व राजस्व विभाग के कर्मचारी इसे मैनुअल तरीके से सर्वे के आंकड़े शासन को मुहैय्या कराते थे, जिससे पूरी तरह ठीक नहीं होते थे।

फसलीय क्षति का सटीक आंकलन किया जाऐगा

अब इस योजना के तहत कराए जा रहे डिजिटल क्राप सर्वे (Digital Crop Survey) से पता चल सकेगा किसान ने अपने खेत में कौन सी फसल बोई है। आपदा से बर्बाद फसल का सरकार और बीमा कंपनी फसल के नुकसान का सटीक आकलन कर आसानी से नुकसान की भरपाई के लिए मुआवजा देगी। पहले प्रदेश के किस जिले के कौन से खेत के किस रकबे में कितनी फसल बोई गई है। इसका रिकॉर्ड कृषि और राजस्व विभाग के कर्मचारी कागजों में दर्ज करते हुए सरकार को आंकड़े उपलब्ध कराते थे, जो पूरी तरह सही नहीं होते थे। अब सटीक आंकड़े जुटाने के लिए अत्याधुनिक तरीके से डिजिटल क्राप सर्वे किया जा रहा है।

Red Gold : केसर की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

कृषक भाई केसर की खेती कर काफी शानदार फायदा हांसिल कर सकते हैं। कृषक इसके लिए उन्हें कुछ विशेष बातों का ख्याल पड़ेगा। खानपान की सामग्रियों से लेकर पूजा पाठ और औषधियों में केसर का उपयोग किया जाता है। केसर की मांग बाजार में वर्ष भर बनी रहती है। ऐसी स्थिति में यदि आप परंपरागत फसलों का उत्पादन करके ऊब गए हैं, तो आप केसर की खेती कर सकते हैं। केसर की खेती में मुनाफा भी काफी ज्यादा होता है। बाजार में यह ऊंची कीमतों पर बिकती है। केसर को लाल सोना मतलब कि रेड गोल्ड भी कहा जाता है। बाजार में आज के दौरान 1 किलो केसर की कीमत 3 लाख रुपये तक हैं।

केसर की खेती के लिए मृदा एवं जलवायु

कृषक भाइयों को केसर की खेती के दौरान कुछ महत्वपूर्ण बातों का विशेष ख्याल रखना चाहिए। केसर की खेती के लिए ठंडी एवं शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। भारत में केसर की खेती प्रमुख रूप से जम्मू और कश्मीर में की जाती है। केसर की खेती के लिए बेहतरीन जल निकासी वाली रेतीली दोमट मृदा शानदार होती है। केसर के बीज काफी ज्यादा छोटे होते हैं। इस वजह से इन्हें उगाने के लिए विशेष तकनीक का उपयोग करना होता है। साथ ही, इसके शानदार रखरखाव की भी जरूरत पड़ती है। इसकी खेती के लिए समय–समय पर सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण व कीट नियंत्रण की जरूरत होती है। केसर की फसल 7–8 महीने में पककर तैयार हो जाती है। फसल पकने के पश्चात केसर के फूलों को तोड़कर सुखाया जाता है। सूखे केसर को छीलकर बाजार में बेचा जाता है।

केसर की खेती से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें

विशेषज्ञों के मुताबिक, केसर की खेती के लिए खेत की मृदा को बेहतर ढ़ंग से तैयार करें। मृदा की 2–3 बार जुताई करें फिर उसके बाद उसे एकसार कर दें। केसर के बीज की सितंबर – अक्टूबर माह के दौरान बिजाई की जाती है। बीज की 2–3 सेंटीमीटर गहराई में बिजाई करनी चाहिए। वहीं, इसकी फसल की नियमित तोर पर सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। विशेष तौर पर फूल आने के दौरान और फसल पकने के समय ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल को वक्त–वक्त पर खाद और उर्वरक की जरूरत पड़ती है। केसर की फसल में खरपतवार का होना नुकसानदायक होता है। इस वजह से इन पर नियंत्रण भी आवश्यक है।

मिट्टी की सेहत–खाद

किसान भाइयों के लिए यूरिया से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

कृषकों द्वारा अपनी फसल से ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने के लिए यूरिया का इस्तेमाल किया जाता है। यूरिया फसलों की वृद्धि के लिए काफी जरूरी है। परंतु, कुछ फसलों को इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती है। यूरिया का उपयोग खेत में काफी मात्रा में किया जाता है। यूरिया डालने के कुछ समय के उपरांत खेत की उपज प्रभावित होने लगती है। विशेषज्ञों के मुताबिक यूरिया एक रासायनिक उर्वरक है, जो कि नाइट्रोजन का एक बड़ा स्रोत माना जाता है। यह फसलों की बढ़वार के लिए काफी आवश्यक है। लेकिन कुछ फसलों को यूरिया की आवश्यकता नहीं होती है।

यूरिया का इस्तेमाल इन फसलों में नहीं होता है

दलहन फसलें जैसे कि अरहर, चना और मटर अपनी जड़ों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण की प्रक्रिया करते हैं। इस प्रक्रिया में वे वायुमंडलीय नाइट्रोजन को अवशोषित करते हैं। साथ ही, उसे पौधे के लिए उपयोगी रूप में परिवर्तित करते हैं। इस वजह से दलहन फसलों को यूरिया की आवश्यकता नहीं होती है। रेशेदार फसलें जिनमें सन, जूट और कपास शामिल हैं। इन फसलों को भी यूरिया की जरूरत नहीं पड़ती है। इनके अतिरिक्त बैंगन, मिर्च और टमाटर यूरिया के प्रति संवेदनशील होती हैं। इन फसलों पर यूरिया का उपयोग करने से पत्तियों पर जलन हो सकती है।

किसान भाई इन चीजों पर विश्वास कर सकते हैं

मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट से आपको पता चल सकता है, कि आपके खेत में कौन–कौन से पोषक तत्वों का अभाव है और कितनी मात्रा में कमी है। इस रिपोर्ट के आधार पर आप उर्वरक का उपयोग कर सकते हैं। साथ ही, कृषि विज्ञान केंद्रों के विशेषज्ञ फसलों के लिए उर्वरक के इस्तेमाल के बारे में सही जानकारी दे सकते हैं। साथ ही, कृषि विश्वविद्यालयों के अनुसंधानों से भी आपको उर्वरक के इस्तेमाल के बारे में सही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

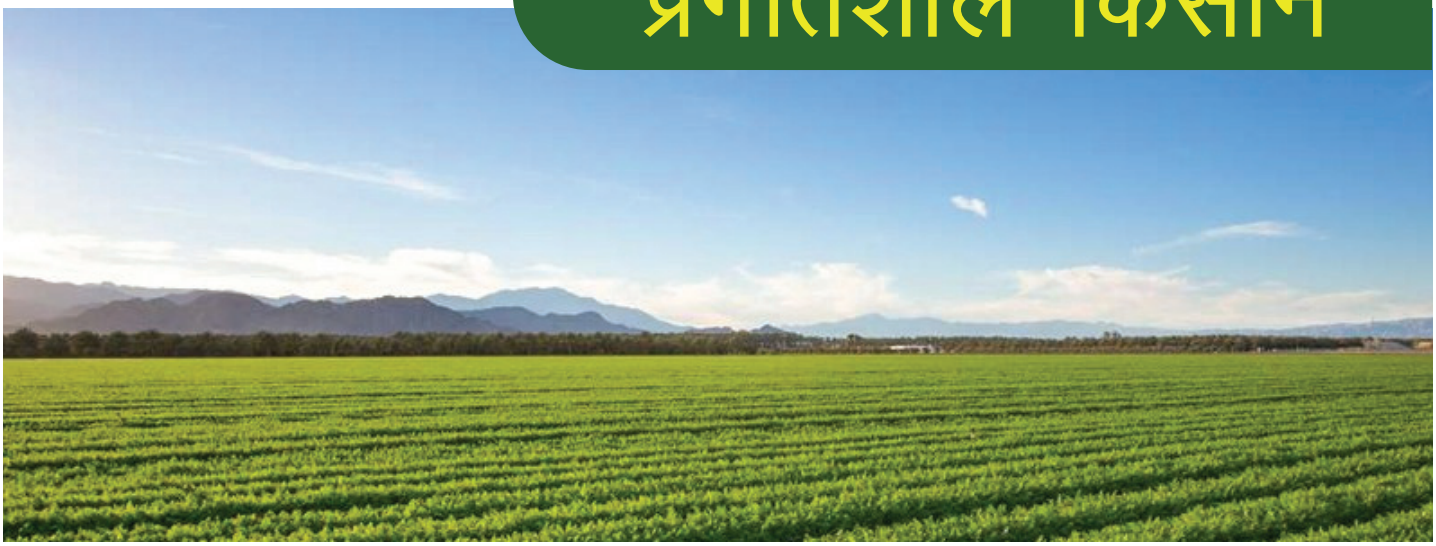

सॉफ्टवेयर इंजीनियर की नौकरी छोड़ बने सफल किसान की पीएम मोदी ने की सराहना

आज के समय में सरकार व किसान स्वयं अपनी आय को दोगुना करने के लिए विभिन्न कोशिशें कर रहे हैं। इसकी वजह से किसान फिलहाल परंपरागत खेती के साथ–साथ खेती की नवीन तकनीकों को अपनाने लगे हैं, परिणाम स्वरूप उन्हें अच्छा–खासा मुनाफा भी हांसिल हो रहा है। तेलंगाना के करीम. नगर के किसान ने भी इसी प्रकार की मिश्रित खेती को अपनाकर अपनी आमदनी को लगभग दोगुना किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी करीमनगर के किसान की इन कोशिशों और परिश्रम की सराहना की। साथ ही, कहा कि आप भी खेती में संभावनाओं का काफी सशक्त उदाहरण हैं। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 18 जनवरी 2023 को विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वार्तालाप की है। इस कार्यक्रम में भारत भर से विकसित भारत संकल्प यात्रा के हजारों लाभ. र्थी शम्मिलित हुए हैं। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री, सांसद, विधायक और स्थानीय स्तर के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

बीटेक स्नातक कृषक एम मल्लिकार्जुन रेड्डी की प्रतिवर्ष आय

प्रधानमंत्री मोदी से वार्तालाप करते हुए करीमनगर, तेलंगाना के किसान एम मल्लिकार्जुन रेड्डी ने बताया कि वह पशुपालन और बागवानी फसलों की खेती कर रहे हैं। कृषक रेड्डी बीटेक से स्नातक हैं और खेती से पहले वह एक सॉफ्टवेयर कंपनी में कार्य किया करते थे। किसान ने अपनी यात्रा के विषय में बताया कि शिक्षा ने उन्हें एक बेहतर किसान बनने में सहायता की है। वह एक एकीकृत पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं, इसके अंतर्गत वह पशुपालन, बागवानी और प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। बतादें, कि इस पद्धति का विशेष फायदा उनको होने वाली नियमित दैनिक आमदनी है। वह औषधीय खेती भी करते हैं और पांच स्त्रोतो से आमदनी भी हांसिल कर रहे हैं। पूर्व में वह पारंपरिक एकल पद्धति से खेती करने पर हर साल 6 लाख रुपये की आय करते थे। साथ ही, वर्तमान में एकीकृत पद्धति से वह हर साल 12 लाख रुपये की कमाई कर रहे हैं, जो उनकी विगत आमदनी से भी दोगुना है।

कृषक रेड्डी को उपराष्ट्रपति द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है

किसान रेड्डी को आईसीएआर समेत बहुत सारे संस्थाओं एवं पूर्व उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू द्वारा भी सम्मानित व पुरुस्कृत किया जा चुका है। वह एकीकृत और प्राकृतिक खेती का प्रचार–प्रसार भी खूब कर रहे हैं। साथ ही, आसपास के क्षेत्रों में कृषकों को प्रशिक्षण भी प्रदान कर रहे हैं।

उन्होंने, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, किसान क्रेडिट कार्ड, ड्रिप सिंचाई सब्सिडी और फसल बीमा का फायदा उठाया है। प्रधानमंत्री ने उनसे केसीसी पर लिए गए ऋण पर अपनी ब्याज दर की जांच–परख करने के लिए कहा है। क्योंकि, केंद्र सरकार और राज्य सरकार ब्याज अनुदान प्रदान करती है।

कोड को स्कैन कर मेरीखेती यूट्यूब चौनल सब्सक्राइब करें।

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

किसानों की खुशहाली की पहचान

इफको नैनो डीएपी तरल

50 किलो डीएपी का दम अब सिर्फ आधा लीटर की बोतल में

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010